संगीत गायन

(ग्यारहवीं श्रेणी के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड
साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संस्करण : 2016 .... 00,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government.

संपादक एवं संयोजक : श्रीमती चरणप्रीत कौर

लेखक– (*i*) श्रीमती वरिन्द्र कौर, लैक्चरार संगीत, सरकारी सी.सैं. स्कूल लड़कियाँ नाबा, पटियाला।

(*ii*) श्रीमती मनप्रीत कौर, संगीत टीचर, सरकारी मॉडल सी.सैं. स्कूल सैक्टर-37-सी, चण्डीगढ़।

(*iii*) श्रीमती मनदीप कौर, लैक्चरार संगीत, सरकारी सी.सैं. स्कूल, 3बी-I, मोहाली।

(*iv*) श्रीमती करणवीर कौर, लैक्चरार संगीत, प:स:श:ब, आदर्श सी.सैं. स्कूल, श्री अमृतसर साहब

अनुवादक– श्री मनदीप कौर,

कवर डिज़ाइन (चित्रकार) श्री मनजीत सिंह ढिल्लों सीनियर आर्टिसट पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का जाली प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ पर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 00.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्स नोवा पब्लिकेशन्ज़, सी-51, फोकल प्वाईंट एक्सटेन्शन, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड अपनी स्थापना के समय से ही स्कूल स्तर के सभी विषयों के पाठ्यक्रम संशोधित करने और संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में प्रयत्नशील रहा है।

संगीत (गायन) विषय का पाठ्यक्रम कई वर्षों से पुराना ही लागू था। आधुनिक युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस विषय के पाठ्यक्रम को संशोधित करना समय की माँग थी। अतएव प्रवेश वर्ष 2015-16 एन.सी.एफ. 2005 और पी.सी.एफ. 2013 सुझावों के अनुसार क्षेत्रीय विषय विशेषज्ञों के सहयोग से पाठ्यक्रम का संशोधन किया गया। संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रवेश वर्ष 2016-17 से संगीत विषय की नई पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक ग्यारहवीं के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। पुस्तक की विषय वस्तु को रोचक, सरल और स्पष्ट बनाने के लिए आवश्यक साज़ों और संगीतज्ञों के चित्र दिये गये हैं। गायन के अभ्यास हेतु क्रियात्मक भाग में सुर अभ्यास पर विशेष बल दिया गया है ताकि विद्यार्थी संगीत को क्रियात्मक रूप में ग्रहण कर सकें।

आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में संगीत विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करेगी। यह पुस्तक अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से प्राप्त सुझाव आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरपर्सन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ नं.
1.	परिभाषाएँ : संगीत, ध्वनि, अलंकार, सरगम गीत, आलाप, जाति, तान, पकड़, आरोह, अवरोह	1
2.	वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर, वर्जित स्वर	9
3.	जीवनी : (*i*) प्रो: सोहन सिंह	13
	(*ii*) डॉ० दिलीप चन्द्र बेदी	16
4.	पटियाला घराना और दिल्ली घराना	18
5.	भारतीय संगीत में वाद्यों (साजों का वर्गीकरण तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनध वाद्य, घन वाद्य)	23
6.	मेरा मनपसन्द विषय : संगीत	29
7.	नाद–परिभाषा, भेद	32
8.	ख्याल शैली की खोज (आविष्कार)	35
9.	संगीत का साज–तानपुरा : इतिहास, अंग वर्णन	38
10.	अलंकार : थाट बिलावल, थाट कल्याण	43
11.	राग कल्याण : साधारण जान पहचान, आलाप, बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, तानें	44
12.	राग अलैहिया बिलावल : साधारण जान पहचान, आलाप, बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, तानें	49
13.	राग वृन्दावनी सारंग : साधारण जान पहचान, आलाप, बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, तानें	54
14.	तालें : ताल दादरा, तीन ताल, झपताल, चारताल (चोताल)	59
15.	भजन : राग कल्याण, राग अल्हैया बिलावल, राग वृन्दावनी सारंग	62
16.	शब्द : राग कल्याण, राग अल्हैया बिलावल, राग वृन्दावनी सारंग	65
17.	स्वागती गीत (*i*), (*ii*)	68
	प्रश्न बैंक	72

पाठ 1

परिभाषाएँ

(i) संगीत

कादर की कुदरत में असीमित रचनाएँ पाई गई हैं। अन्य जीवों की तरह मनुष्य भी प्रकृति में दिखने और सुनने वाली सुंदरताओं से मोहित हुआ है। हजारों सालों से मनुष्य फूलों पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, पहाड़ों, नदियों और झरनों से आकर्षित हुआ है। बादलों के मौसम में मोर के नाच, आम के मौसम में कोयल की कू-कू, सुबह-सुबह पंछियों का चहकना, आसमान में उड़ते चहकते पक्षियों की और पहाड़ों की शान्ति में नदियों और झरनों की मनमोहक आवाज़ें मनुष्य के मन को आनंदित करती आई हैं। इस तरह मनुष्य की रचनात्मक विलक्षणता ने इस असीमित कुदरती कलाओं से सीखते हुए भाषाओं के रूप में अपनी भावनाओं को और कुदरती रचनाओं को प्रकट करने की योग्यता और फिर इसे सुर और लय में सीखते हुए संगीत तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की है।

दुनिया के हर कोने से सदियों से इन कलाओं का वर्णन मिलता है। खास तौर पर अपने पुरातन ग्रंथों में, वेदों में, पुराणों में संगीत की परिभाषा इस तरह है "समयक गीयते इति संगीतम"

"समयक योग प्रकारेण यदि गीते तत संगीतम यहाँ समयक भाव योग प्रकारेण भाव तरीका है। इस तरह योग और ठीक तरीके से गाने को संगीत कहा जाता है।

संगीत रतनागर में इसकी परिभाषा इस तरह है। ....

"गीते वाध्य तथा नृत्य तृत्य संगीत मुचयतें

भाव गीत गाना, साज बजाना और नाचना तीनों का योग और ठीक से मिलता ही संगीत है।

महान लेखक भाई कान सिंह नाभा जी के अनुसार संगीत "संगीत: सं-गीत, नृत्य, गायन और बजाने, इस तीनों का समुदाय है।"

इस तरह गीत आवाज के द्वारा शब्दों को प्रकट कर के अपनी भावनाओं को दर्शाने से बना है। इस को रोचक बनाने के लिए इस के अनुसार साज का विकास हुआ।

'नाचना, खेलना मन का चाव'

गाने और बजाने के साथ-साथ नाज़ द्वारा शारीरिक दाव्यों, भाव्यों द्वारा, इस तरह संगीत कलायें तीन तरह की हैं :

गायन : अपने भावों को, शब्दों से अपनी आवाज द्वारा प्रकट करने की कला को गायन कहते हैं।

वाद्य : किसी भी तरह के साज को बजा कर अपने भाव्यों को प्रकट करने की कला को वाद्य कहते हैं, यह शब्दों द्वारा नहीं बल्कि स्वरों की लय और ताल द्वारा किया जाता है।

नृत्य : अपनी शारीरिक मुद्राओं द्वारा मन के भव्यों को दर्शाने की कला को नृत्य कहा जाता है। नृत्य भी लय और ताल में होता है। जिस में स्वरों की मदद भी ली जाती है।

संगीत के दो भाग हैं।

भाव संगीत : दिल में भावों को प्रकट कर रहे और आम जनता को आसानी से समझ आने वाले संगीत को भाव संगीत कहते हैं। यह जरूरी नहीं कि संगीत शास्त्र के सारे नियमों की पालना की जाए। लव्यि, गीत, भजन, फिल्मी गीत, ब्याह-शादी के गीत आदि भाव गीत हैं।

शास्त्रीय संगीत : शास्त्रीय संगीत में, संगीत शास्त्र के नियमों और राग आदि में नियमों की पालना की जाती है। इस सगीत में व्याकरण संगीत शास्त्र के नियमों के अनुसार होती है और इस में व्याकरण के नियमों की पूरी पालना की जाती है।

रागों के अनुसार गुरुवाणी का गायन शास्त्रीय संगीत है।

व्यावहारिक तौर पर संगीत के निम्नलिखित सिद्धांत हैं–

1. **सैद्धान्तिक लिखित संगीत–**सिद्धान्तों के अनुसार संगीत को लिखित रूप को सैद्धान्तिक संगीत कहते हैं।

2. **क्रियात्मक–**संगीत-गाने बजाने और नाचने द्वारा प्रदर्शित संगीत को क्रियात्मक संगीत कहते हैं।

(ii) ध्वनि

मनुष्य का मन कुदरती नजारों, झरनों, पशु-पक्षियों की आवाजों, मोर के नृत्य को देखकर हमेशा आकर्षित हुआ है। इन अद्‌भुत नजारों को मनुष्य ने चित्रकला, पक्षियों की आवाजों को गाकर और मोर के नृत्य को देखकर मनुष्य खुद नृत्य करने लग पड़ा।

मनुष्य ने मधुर ध्वनियों की आवाजों को सुना और सुरीले संगीत की सृजना की। खुद के गाने के साथ-साथ, ध्वनियों को भिन्न-भिन्न वस्तुओं में से निकालने लगा। खुशी को प्रगटाने के लिए अपनी शारीरिक क्रियाओं द्वारा लय-ताल से लहराने लगा। यही आगे चल कर गायन वादन और नृत्य में विकसित हो गये।

लय और ताल द्वारा मनुष्य कंठ या साज द्वारा अनेक ध्वनियों को उत्पन्न करने की कला को संगीत कहा गया। संगीत का आधार नाद है।

ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक तो वह ध्वनियाँ हैं जो सुनने में मधुर हों, वह संगीत के लिए उपयोगी होती हैं। दूसरी वह जो कर्कश, शोरगुल उत्पन्न करने वाली हों उन्हें जिस आवाज में कंपन कम, ज्यादा हो उसे अनियमित आन्दोलन कहा जाता है।

जो आवाज नियमित होती है, मधुर होती है, वह संगीत के लिए उपयोगी होती है और वह आवाज जो बेसुरी कर्कश होती है, वह संगीत के लिए उपयोगी नहीं होती है। इसका संगीत में कोई स्थान नहीं होता।

ध्वनि दो प्रकार की होती है–

1. अनाहत ध्वनि

2. आहत ध्वनि

1. अनाहत ध्वनि–बिना किसी चोट, रगड़ से पैदा हुई ध्वनि को अनाहत ध्वनि कहा जाता है, मोक्ष की प्राप्ति के लिए ऋषि-मुनि इसकी उपासना करते थे। यह आजकल प्रचार में नहीं है।

2. आहत ध्वनि–आहत का अर्थ है टकराना। हर तरह की आपसी टकराव से पैदा हुई ध्वनियाँ संगीत उपयोगी नहीं होतीं। किसी वस्तु के गिरने की आवाज बर्तनों के आपस में टकराने की आवाज़ अनिमियत अन्दोलन पैदा करती है। ये बेसुरी और कर्कश होती है। यह संगीत के लिये उपयोगी नहीं होती। संगीत का सम्बन्ध तो केवल सुरीली ध्वनियों से होता है अर्थात् नियमित अन्दोलन संख्या द्वारा पैदा हुई ध्वनियां ही संगीत के लिये सहायक होती है। यह ध्वनियां तीन प्रकार की होती है।

1. एक वस्तु का दूसरी वस्तु से चोट मारने से जैसे–तबला, ढोल।

2. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के रगड़ने से जैसे–सारंगी, वायलिन।

3. किसी वस्तु का हवा के प्रवेश करने से जैसे–हरमोनियम, बाँसुरी, शहनाई आदि।

(iii) अलंकार

अलंकार संस्कृत भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है सजाना। जिस प्रकार स्त्री अपने आप को गहनों-आभूषणो से सजाती है उसी प्रकार अलंकार संगीत के गहने हैं जो राग को सजाते हैं।

अलंकार में स्वर सनुह नियमित क्रम में आते हैं। पं० अहोवल के अनुसार क्रमवार स्वरों का समूह जो अच्छी तरह से गुँथा होता है अलंकार कहलाता है।

संगीत रतनाकर पं० सारंगदेव के अनुसार वर्णों में रची गई स्वरों की विशेष रचना को अलंकार कहते हैं।

पं० विवेक साहनी जी कहते हैं सुरों की ऐसी सुन्दर और विशेष लयबद्ध स्वर रचना जो उसी क्रम में आरोह अवरोह में गाई बजाई जाये, अलंकार कहलाती है।

अलंकार के दो भेद होते हैं–

1. आरोह

2. अवरोह

अलंकार में जो व्यवस्था आरोह में होती है वही अवरोह में होती है जैसे–

स रे ग म प ध नी सं	आरोह
सं नी ध प म ग रे स	अवरोह

अलंकारों की रचना विधि–

1. वह विशेष स्वर रचना हो, लयबद्ध हो और आरोह अवरोह में रची गई हो।
2. अलंकार मध्यम स से शुरू होकर तार सप्तक के सं तक बोला जाता है और वापिस तार सप्तक के स से मध्यम स तक आता है।
3. अलंकार में शुद्ध या कोमल कोई भी स्वर प्रयोग किया जाता है।

अलंकारों के लाभ–

1. इस से स्वर ज्ञान और लय ज्ञान होता है।
2. गायन में गाने की तैयारी में लाभदायक सिद्ध होती हैं।
3. इस से कल्पना शक्ति बढ़ती है।
4. भिन्न–भिन्न लयकारियों का अभ्यास सरल हो जाता है।
5. इससे राग को सजाने में सहायता मिलती है।
6. सुन्दर तानों से राग में अद्‌भुत प्रभाव उत्पन्न होता है।

(*iv*) सरगम गीत

केवल सुरों में रची गई रचना को सरगम गीत कहा जाता है ऐसी संगीतज्ञ तालबद्ध रचना जिसमें केवल राग के स्वरों का ही प्रयोग किया जाता है, उसे सरगम गीत कहते हैं।

यह एक शास्त्रीय गायन शैली है। इसमें शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया जाता। शुरू में संगीत सीखने वाले विद्यार्थियों को इस की शिक्षा दी जाती है इनके साथ रागों का स्वरूप समझ आ जाता है। सुरों का लगाव, ठहराव एवं सही सुर स्थान का भी पता चलता है। यह एक सरल और सीधी राग रचना होती है जिसे विद्यार्थी जल्दी समझ लेता है। सरगम गीत के दो भाग होते हैं।

(*i*) स्थाई

(*ii*) अन्तरा

सरगम गीत शास्त्रीय संगीत में गाया जाता है। इसमें तीन ताल एक ताल बजाये जाते हैं। इसकी गायन शैली छोटी ख्याल जैसी होती है। इसमें पहले स्थाई फिर अन्तरा लेते हुए छोटी-छोटी तानों का प्रयोग किया जाता है।

(*v*) आलाप

गायक कोई भी गीत गाने से पहले उस गीत में लगने वाले स्वरों का थोड़ा-सा स्वरूप दिखाता है। उसे आलाप कहा जाता है। यह स्वरूप सरगम में भी हो सकता है और आकार में भी।

राग का सारा ढांचा राग के अलाप में ही नजर आ जाता है। सप्तक से मध्य से तार सप्तक में धीरे-धीरे बढ़ते हुए स्वर का जो विस्तार किया जाता है, वह आलाप कहलाता है। गम्भीर प्रकृति का होने के कारण इस की गति विलम्बित होती है।

पं० भातखण्डे के अनुसार हमारे गायक कोई भी गीत गाने से पहले उस राग वाले राग स्वरूप का थोड़ा-सा दिग्दर्शन कराते हैं तो इसे आलाप कहा जाता है।

श्रीमती महारानी शर्मा के अनुसार आलाप गायन वादन की क्रिया असल में राग प्रकार होने से पहले की तैयारी है, जिस से राग का पूर्व आभास उस सुर विस्तार या आलाप से नजर आता है।

आलाप राग के विस्तार करने का एक साधन है। राग को बन्दिश से पहले राग में लगाए जाने वाले स्वरों से राग का स्वरूप स्पष्ट करना आलाप कहलाता है।

आलाप को दो भागों में बाँटा जाता है :

1. आकार द्वारा
2. नोम तोम द्वारा

(*vi*) जाति

राग की जाति से भाव है राग में लगने वाले स्वरों की गिणती। राग का एक नियम है इसमें कम से कम पाँच और ज्यादा से ज्यादा सात स्वर होने जरूरी है। इसलिए राग के अरोह,

अवरोह में जो स्वर लगते है उसके आधार पर जातियां निश्चित होती है। इन जातियों द्वारा राग एक दूसरे से अलग पहचाना जाता है। राग में लगने वाले स्वरों के आधार पर राग की मुख्य तीन जातियाँ हैं।

1. सम्पूर्ण 2. षाडंव 3. ओडव

1. **सम्पूर्ण**–सात स्वरों के राग को सम्पूर्ण जाति के राग कहते हैं। जैसे भैरव, भैरवी, यमन, बिलावल।
2. **षाडंव**–छः स्वर वाले राग को षाडंव जाति का राग कहते हैं। जैसे मारवा, पूरिया, सोहनी आदि।
3. **ओडव**–पाँच स्वर वाले राग को ओडव जाति का राग कहते हैं। जैसे भूपाली, मालकौंस।

(*vii*) तान

तान शब्द तनु धातु से बना है जिसका अर्थ है तानना, फैलाना या विस्तार करना। जब गायक राग रूपी शरीर को फैलाता है और उस को सजाता है तो उस क्रिया को तान कहते हैं। तानों द्वारा ही राग की सुन्दरता में बढ़ोतरी होती है और सुनने वालों को इस की अनुभूति होती है।

नगमातुल हिन्द जी के अनुसार स्वरों के समूह को तान कहते हैं जिस से राग में बढ़त करना होता है। तान का मुख्य उद्देश्य गायन में विचित्रता को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना होता है।

पं० भातखण्डे जी के अनुसार यदि रीति से तानें ली जाए तो बड़ा ही आनन्द आता है। इसलिए तानों के स्तर राग नियमों के अनुसार राग के भाव अनुसार होने चाहिए। पं० ओंकार नाथ ठाकुर जी कहते हैं जब कोई अलंकार किसी-किसी राग के नियमों में बन्ध कर प्रयोग किया जाता है तो वह तान कहलाता है।

बड़े गुलाम अली खाँ कहते हैं जब मैं राग के दरिया में डूब जाता हूँ, रागिनी के इश्क में पागल हो जाता हूँ तो जो चीज़ मेरे मुँह से मुख्य रूप से निकलती है मैं तो उसे तान कहता हूँ।

उपरोक्त परिभाषा के अनुसार राग को सजाना, तानना, विस्तार करना, अलग-अलग ढंग से स्वरों का प्रयोग करना तान कहलाता है। यह प्रयोग राग की प्रकृति और नियमों के अनुसार होना जरूरी है। राग के यह स्वर समूह राग में विचित्रता, चमत्कार पैदा करने में योगदान देते हैं।

(*viii*) पकड़

राग में लगने वाला वह छोटा-सा विशेष समूह जिससे राग की पहचान एक दिन से हो जाए पकड़ कहलाता है। राग के आरोह, अवरोह के बाद पकड़ गाई जाती है। पकड़ से वाद-संवाद की पहचान हो जाती है। राग की चाल कैसी है, किन स्वरों पर ठहराव किया जाता है यह पकड़ से पता चलता है।

राग की पकड़ अलग-अलग होती है। राग को गाते बजाते हुए पकड़ के विशेष स्वर समूह को बार-बार प्रयोग में लाया जाता है जिससे राग का स्वरूप स्पष्ट होता है।

राग भैरव की पकड़–ग॒, म, धऽ, धऽ, म, ग, रेऽ, रेऽ, स

राग कलिगड़ा की पकड़–ध॒, प, ग म, ग, रे, स।

राग की पकड़ से राग का स्वरूप दिमाग में बैठ जाता है। राग के स्वरूप की शुद्ध को स्थिर रखने के लिए पकड़ को याद रखना जरूरी है। यदि कभी आलाप लेते हुए राग से उसने लगे तो पकड़ लेकर एक दम से राग का शुद्ध रूप स्थिर हो जाता है।

(*ix*) आरोह

आरोह का अर्थ है चढ़ता क्रम अर्थात स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहा जाता है। जैसे : स रे ग म प ध नी सं

गायक गाते हुए विशेष स्वर पर नहीं रुकते वह ऊपर नीचे होते रहते हैं। आरोह हमेशा सप्तक के स से तार सप्तक के स तक है। आरोह की परिभाषा इस प्रकार है।

गायन या वादन करते समय आवाज लगातार ऊँची होती जाए तो उसे आरोह कहा जाता है। जैसे - स रे ग म प ध नी सं।

(*x*) अवरोह

अवरोह से राग में लगने वाले स्वरों की जानकारी मिलती है। इससे अवरोह-आरोह से राग की जाती निश्चित होती है। राग के चलन के साथ ही आरोह अवरोह निश्चित होते हैं।

अवरोह की परिभाषा इस प्रकार है–जब कलाकार आरोह की उलटी दिशा में गायन करता है तो संगीत की परिभाषा में इसे अवरोह कहा जाता है।

एक और परिभाषा के अनुसार ''ऊँची अवाज से नीची आवाज में गायन क्रिया करने को अवरोह कहा जाता है : यह जरूरी नहीं की इसमें सात स्वर लगें। राग के स्वरों के अनुसार आरोह अवरोह होते हैं। जैसे राग भोपाली में पाँच स्वर लगते हैं।

जैसे-सं ध प ग रे स - अवरोह

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. संगीत के भागों का नाम बताओ।
2. ध्वनि की परिभाषा लिखो।
3. अलंकार के कोई दो लाभ लिखो।
4. स्वरों के नीचे के क्रम से ऊपर वाले क्रम में जाने को क्या कहते हैं?
5. स्वरों के ऊपर के क्रम को क्या कहते हैं?
6. स्वरों का वह समूह जिसमें राग की पहचान होती है उसको क्या कहते हैं?
7. स्वरों में रची गई रचना को क्या कहते हैं ?
8. राग की जाति से क्या भाव है?
9. राग का आरम्भ कब होता है?
10. आलाप हमेशा किस लय में होता है?
11. तान शब्द किस से बना है?

अध्यापक के लिए–

1. अध्यापक विद्यार्थियों को अलंकार गाना सिखाएँगे और आलाप और तान को गाकर विद्यार्थियों को सिखाएँगे।

पाठ 2

वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर, वर्जित स्वर

जिस तरह राज्य में राजा, मंत्री, प्रजा, शत्रु और स्कूल में प्रिंसीपल, वाइस प्रिंसीपल, अध्यापक, मुख्य मेहमान की भूमिका होती है। उसी प्रकार राग में वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर अपनी मुख्य भूमिका निभाते हैं।

राग में चार प्रकार के स्वर होते हैं। राग का सारा स्वरूप उनके ऊपर निर्भर करता है। संवादी स्वर राजा या कह लीजिए कि मुख्य अध्यापक का रोल अदा करता है। जिस पर सारे राज्य और स्कूल का दरोमदार टिका होता है। उसी तरह एक राग में वादी स्वर बहुत बड़ा रोल अदा करता है। इसका प्रयोग राग में बार-बार होता है। यह राग का सबसे महत्त्वपूर्ण स्वर होता है। वादी स्वर के बाद जो स्वर सबसे ज्यादा प्रयोग में आता है वह है संवादी स्वर। इसको मंत्री था वाईस प्रिंसीपल भी कह सकते हैं। क्योंकि राग में यह स्वर मंत्री या वाईस प्रिंसीपल की तरह जिम्मेदारी निभाते हैं। यह स्वर वादी स्वर से कम पर बाकी स्वरों से ज्यादा प्रयोग में आता है। राग में लगने वाले तीसरे स्वर को अनुवादी स्वर कहा जाता है।

राग में वादी संवादी स्वर के बाद जो बाकी स्वर राग में लगते हैं उन्हें अनुवादी स्वर कहा जाता है। इसको हम स्कूल में अध्यापक और राज्य में प्रजा की तरह सहायता करने वाले कह सकते हैं : चौथा स्वर विवादी कहलाता है। इस स्वर को दुश्मन या शत्रु कहा जाता है। पर अगर राग में इसका प्रयोग कम और सूझ-बूझ से हो तो यह दुश्मन नहीं अपितु यह सहायक के रूप में बहुत बड़ा योगदान डालने वाला सहायक होता है। अर्थात बृहस्पति जी के अनुसार 'वादी संवादी' 'विवादी और अनुवादी' किसी भी धुन, राग या जाती में प्रयुक्त विभिन्न स्वर इन चार श्रेणियों में बांटे जाने से रूजकता पैदा कर सकते हैं।

(*i*) वादी स्वर

राग में लगने वाले स्वरों का प्रयोग अलग-अलग होता है। योजना के अनुसार किसी भी स्वर का प्रयोग कम या ज्यादा हो सकता है जो राग की सुन्दरता बढ़ाने के लिए जरूरी होता है। राग में जिस स्वर का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा होता है उसे राग का वादी स्वर कहा जाता है।

सारे राग प्रदर्शन के समय यह स्वर अपनी पहचान बनाए रखता है। इस को राग का प्राण भी कहा जाता है या ज्यादा बोलने वाले स्वर को भी वादी स्वर कहा जा सकता है। अनेक संगीतकारों ने इस की कई परिभाषाएँ भी दी हैं। पं० भातखण्डे जी के अनुसार जो सुर राग को ज्यादा प्रकट करे उस को वादी स्वर कहते हैं।

राग में जिस स्वर का बार-बार प्रयोग हो या उस पर ठहराव किया जाए उसे वादी स्वर कहते हैं।

प्राचीन राग सप्ती अनुसार इस स्वर को अंश स्वर कहा जाता था जो सुर राग में दूसरे स्वरों की बजाए ज्यादा प्रयोग हो या जिस से राग का स्वरूप पूरी तरह प्रकट हो उसे वादी स्वर कहा जाता है।

स्वर पर राग की सारी सुन्दरता और शोभा टिकी होती है। भरत मुनि के अनुसार राग में वादी स्वर की प्रधानता होने के कारण या ज्यादा ठहराव होने के कारण, राग का उसी स्वर से गुरु और खत्म करने, राग के मुख्य हिस्सों में उसे बार-बार अलग ढंगों से दिखाने में यह स्वर मुख्य भूमिका निभाता है।

अगर दो राग आपस में समान हों पर वादी संवादी स्वर भिन्न-भिन्न होने से राग भिन्न हो जाते हैं। राग भूपाली और देशकार, राग भैरव और राग कलिंगड़ा अपने वादी, संवादी स्वर ज्यादा होने के कारण समय होने के बावजूद हो जाते हैं। वादी स्वर से राग के गाने का समय निर्धारित होता है।

राग के वादी स्वर के दो हिस्से उतरांग और पुरवांग होते हैं। पुरवांग हिस्से स रे ग म म आता है तो उस राग का समय दिन के बारह बजे से रात के 12 बजे तक गाया बजाया जाएगा। इस तरह अगर राग का वादी स्वर उतरांग हिस्से भाव प ध नी स में हो तो वह राग रात के 12 बजे से सुबह के 12 बजे तक गाया जाएगा।

(*ii*) संवादी स्वर

जिस प्रकार राजा की मदद के लिए मन्त्री की जरूरत पड़ती है उसी प्रकार राग में संवादी स्वर की जरूरत पड़ती है। इसी तरह स्कूल में प्रिंसीपल के बाद वाईस प्रिंसीपल की अहमियत होती है। संवादी स्वर वादी स्वर को छोड़ कर बाकी राग में लगने वाले सारे स्वरों से ज्यादा महत्त्व रखता है। वादी संवादी दोनों गाये या बजाए जाने से उत्पन्न होते हैं।

वादी संवादी स्वरों में कम-से-कम चार और ज्यादा-से-ज्यादा पाँच स्वरों का फर्क होता है। यदि वादी स्वर स है तो संवादी स्वर प होगा। यह संवाद इस तरह होगा. स-म-स-प-ग-ध-रे, पा।

यदि किसी राग में प स्वर वर्जित है तो वादी से चौथा स्वर संवादी भाव म होगा।

आचार्य बृहस्पति जी के अनुसारः-

किसी एक स्वर के वादी होने से संवादी अपने आप ही मिल जाएगा। इसके साथ ही राग की सारी सुन्दरता भी खिल जाती है। रखने के लिए वादी संवादी की स्थापना की जाती है तो यह गलत नहीं होगा, सप्तक के पूर्वागभाग में जो वादी स्वर है तो उतराग में उसी का संवादी स्वर विद्यमान होगा जैसेः राग भैरव का वादी स्वर घ है जो उतरांग में है और इस का संवादी रे है जो पूर्वांग में है। इस तरह भोपाली राग का वादी स्वर ग है जो पूर्वांग में है और संवादी स्वर ध है जो उतरांग में है।

(*iii*) अनुवादी स्वर

यह शब्द अनुवादी के मेल से बना है जो स्वर वादी सुर का अनुकरण करता है अनुवादी स्वर कहलाता है। राग रूपी राज में अगर वादी स्वर राजा संवादी, स्वर मंत्री की भूमिका निभाते हैं तो पूज्य अनुवादी स्वर को कहा जाता है। इससे शब्दों में वादी स्वर प्रिंसीपलसंवादी स्वर वाईस प्रिंसीपलसंवादी और अनुवादी स्वर स्कूल में दूसरे अध्यापकों का रोल अदा करता है। प्रत्येक एक दूजे के साथ जुड़ा हुआ है और अपना शास्त्रकारों के अनुसार वादी संवादी स्वरों को छोड़कर बाकी स्वरों को अनुवादी स्वर कहा जाता है।

जहाँ वादी संवादी स्वर राग में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वहाँ अनुवादी स्वरों के बिना राग की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राग की रूप रेखा, स्पष्टीकरण और सुन्दरता अनुवादी स्वरों पर निर्भर करती है। यह स्वर राग की शोभा बढ़ाते हैं।

राग भूपाली में ग वादी ध संवादी है और स, रे, प अनुवादी स्वर है। यह स्वर राग की सुंदरता को प्रदर्शित करते हैं और राग को सही स्वरूप देते हैं।

(*iv*) विवादी स्वर

वह स्वर जो राग में प्रयोग नहीं होते उन्हें विवादी स्वर कहा जाता है। स्वरों के आपसी ताल-मेल से रस की उत्पत्ति होती है और कानों को मधुर लगती है विवादी स्वरों के विशेष प्रयोग से सुन्दरता उत्पन्न की जाती है पर उस में विशेष कुशलता की जरूरत होती है। थोड़ी-सी सावधानी राग के स्वरूप को बिगाड़ सकती है। थोड़ा-सी सावधानी के प्रयोग करने से राग में विशेष आकर्षण पैदा होता है। इस का प्रयोग बार-बार न करके सूक्ष्म रूप ही राग की शोभा को चार चाँद लगाने में कारगर सिद्ध होते हैं।

जिस तरह विहाग में तीव्र म का प्रयोग आजकल विवादी स्वर के रूप में हो रहा है। इस स्वर को दुश्मन की उपमा भी दी जाती है। राग भैरव में शुद्ध रे, गा का प्रयोग सुन्दरता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

कुशलता पूर्वक अगर राग की रंजकता बढ़ती है तो ही इस स्वर का प्रयोग उचित माना जाता है।

राग विबोध के अनुसार...

वर्जित स्वर उन गीतों में सुन्दरता को खत्म नहीं करता पर थोड़ा-सा या कण के रूप में उस स्वर को जल्दी ही लिया जाए।

(*v*) वर्जित स्वर

जिन स्वरों का प्रयोग राग में बिलकुल ही नहीं होता उनको वर्जित स्वर कहा जाता है। इन स्वरों के साथ ही राग की जाति निर्धारित होती है। राग में ज्यादा से ज्यादा 7 और कम-से-कम 5 स्वर होने जरूरी हैं। इस से सिद्ध होता है कि दो स्वरों से ज्यादा स्वर राग में वर्जित नहीं हो सकते कुछ स्वर आरोह और कुछ अवरोह में प्रयोग नहीं है। की जाति बनती है। राग भोपाली में म नी वर्जित स्वर हैं मालकौंस राग में रे, प वर्जित स्वर हैं।

राग में स स्वर कभी वर्जित नहीं होता म और प स्वर दोनों इकट्ठे वर्जित नहीं हो सकते। एक स्वर वर्जित होने से साड़व और दो स्वर वर्जित होने से ओड़व जाति का राग बन जाता है।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वादी स्वर को और किस नाम से जाना जाता है ?
2. राग में सबसे अधिक प्रयोग होने वाले स्वर को क्या कहते हैं ?
3. संवादी स्वर से क्या भाव है ?
4. वादी स्वर से कितना स्वर संवादी होता है ?
5. अनुवादी स्वर को और किस नाम से जाना जाता है ?
6. विवादी स्वर से क्या भाव है ?
7. जिन स्वरों को राग में प्रयोग करने की मनाही होती है उन स्वरों को क्या कहते हैं ?
8. राग का समय निश्चित करने में कौन-सा स्वर सहायता करता है ?

अध्यापक के लिए-

विद्यार्थियों को आम जीवन में से उदाहरण दे कर स्वरों की किस्मों से रूबरू करवाया जाए।

पाठ 3

जीवनी

(*i*) प्रो. सोहन सिंह

आदिकाल से ही संगीत जीवन का स्रोत रहा है। संसार के हर कोने में संगीतकार हुए हैं। पंजाब की धरती सुन्दर, प्रफुल्लित, वातावरण से भरपूर रही है। इस धरती पर गुरुओं, पीरों, पैगम्बरों, ऋषियों और मुनियों ने अपनी रूहानियत दी। इस महान संगीतक कृत्य से प्रेरित हो कर सूरदास, मीराबाई, भाई मरदाना जी जैसे महान संगीतकार पैदा हुए। इस तरह पंजाब से ही प्रो. सोहन सिंह एक महान संगीतकार के रूप में उभरे।

इन महान संगीतकारों की अथक कोशिश से अनेक ग्रन्थ, पुस्तकें, अनमोल धरोहर के रूप में प्राप्त हुए जिनसे आने वाली पीढ़ियों और संगीत प्रेमियों को यह एक महान धरोहर के रूप में मार्गदर्शन का काम करती हैं। इन महान संगीतकारों में प्रो. सोहन सिंह जी का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है।

जन्म–प्रो. सोहन सिंह का जन्म जिला लुधियाना के गाँव रायपुर में 1923 ई० में हुआ। इन के पिता का नाम सरदार फुम्मन सिंह और माता का नाम प्रताप कौर था। आप के माता-पिता गुरु घर के प्रेमी थे। गुरु कीर्तन और गुरु शब्द सुनना उनकी दिनचर्या में शामिल था। जिससे आप के मन में संगीत कला से प्रेम हो गया।

संगीत शिक्षा–बचपन में ही संगीत सीखने का शौक आपके मन में था यह देखते हुए आपके माता-पिता ने 12 साल की उम्र में आपको भाई लाल जी के पास संगीत सीखने के लिए अमृतसर भेज दिया। कुछ देर यहाँ रहने के बाद आप ने ख्याल गायकी के उस्ताद दिलीप चन्द्र बेदी के पास लाहौर जाकर शिक्षा ली आप में संगीत की भूख बढ़ती गई नतीजा यह रहा कि आप ग्वालियर चले गए। यहाँ आकर उमराव खाँ से सीखना शुरू किया। आपकी आवाज़ का जादू ही था कि जो भी आपको सुनता आप का शिष्य बनने के लिए तैयार हो जाता, पर आप का मन यहाँ भी न लगा। फिर आप उस्ताद फैयाज खाँ से शिक्षा लेने के लिए बड़ौदा

चले गए। अनेक मुश्किलों का सामना करते हुए अपने दृढ़ निश्चय और मेहनत सेवाभाव से अपने गुरु का ध्यान अपनी तरफ़ किया और आगरा घराने की बारीकियाँ सीखीं। सात साल की सख्त मेहनत के बाद आपने आगरा घराने के सारे गुण सीख लिए। आप की गायकी और गुरु की गायकी में इतनी समानता थी कि लोग भी धोखा खा जाते कि गुरु गा रहा है या शिष्य। पूरी शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप अपनी मातृभूमि के प्रति आकर्षण पैदा कर सकते है। अपका विचार था कि केवल ड्रिगी प्राप्त करने से कला की गहराई को नहीं जाना जा सकता। अध्यापक के क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले गुरु शिष्य परमात्मा के अनुसार घराने की गायकी की शिक्षा लेनी चाहिए।

उपलब्धियाँ–आप जी ने अपनी कला प्रदर्शन से कई अवार्ड प्राप्त किए। 1976 ई० में श्री राम भारती कला केन्द्र से आपने पाँच हज़ार का नकद इनाम प्राप्त किया। चण्ड़ीगढ़ में 1977 में दिलागीर अवार्ड से नवाज़ा गया। 1980 में आपको संगीत नायक एकादमी द्वारा नवाजा गया एवं राशि और सम्मान पत्र भेंट किए गए।

1980 में चण्ड़ीगढ़ में शास्त्रीय संगीत नायक की उपाधि से नवाजा गया। 1982 में जालन्धर में संगीत शिरोमणी उपाधि दी गई और 1983 में पदम श्री का खिताब दिया गया।

मनपसन्द राग–जै जैवन्ती, ललित, देसी तोड़ी बिहाग, भीमपलासी आपके मनपसन्द राग थे। आलाप, बोल-तान, गमक, मींड़े, मुर्की जोरदार आवाज में आपको महारत हासिल थी।

सोहन सिंह जी ने अपनी प्रतिभा के साथ संगीत में भी बड़ा योगदान दिया। आगरा घराने वापिस आ गए।

आप ने लाहौर फिर जालन्धर से रेड़ियो स्टेशन पर अपने प्रोग्राम देने शुरू कर दिए। 1951 से 1967 तक आप जालन्धर में म्यूजिक सुपरवाईजर के तौर पर काम करते रहे। 1968 के बाद आप ने पंजाबी यूनिवर्सिटी में अध्यापक के तौर पर पदभार संभाला।

सम्मेलन–आप जी की गायकी आगरा घराने की थी। अपनी गायकी से आप श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। आपने दिल्ली, बम्बई, शिमला, बड़ौदा, जालन्धर, लखनऊ, इन्दौर,भोपाल आकाशवाणी केंद्रों से संगीत प्रसारित किया। अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में आप 14 बार संगीत सम्मेलन में 30 साल तक लगातार भाग लेते रहे।

पुस्तकों के काम–अपने तजुर्बे, खोजों, विचारों और ज्ञान से गायन को पुस्तकों के रूप में संचित किया जाता है। जो संगीत प्रेमी और जिज्ञासुओं के लिए वरदान सिद्ध होगी। इसके बिना आपने शब्दों के रिकार्ड और शिदय संगीतकार बना दिया। आप जी के शिष्यों में फिल्मी क्षेत्र के जै देव प्रसिद्ध गजल गायक जगजीत सिंह, बलबीर सिंह, कलमी आदि मुख्य हैं।

आपने सादा जीवन व्यतीत किया। आपका विचार था कि शुद्ध खाना पीना और नियमित अभ्यास की कला से गायकी को बुलन्दियों पर पहुँचाना। 3 फरवरी 1987 को आप संगीत जगत से बिछुड़ गए। परंतु आप के पद चिह्नों पर चलकर आने वाली पीढ़ियाँ संगीत को उँचा उठा सकती है। जिससे हम आप के ऋणी रहेंगे।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर एक पंक्ति या एक शब्द का हो)

1. प्रो. सोहन सिंह का जन्म कहाँ हुआ ?
2. प्रो. सोहन सिंह के पिता का क्या नाम था ?
3. इन्होंने संगीत शिक्षा किस से प्राप्त की ?
4. आप ने किन-किन रेड़ियो स्टेशनों पर प्रोग्राम देने शुरू किए?
5. आप जालन्धर में रेड़ियो स्टेशन के किस पद पर नियुक्त हुए?
6. इनके द्वारा लिखित पुस्तकों के नाम लिखें।
7. सन् 1977 में चण्ड़ीगढ़ में कौन-सी उपाधि दी गई ?
8. इनके दो मनपसन्द रागों के नाम लिखें।

अध्यापक के लिए–

विद्यार्थियों को प्रो: सोहन सिंह के जीवन और गायिकी की जानकारी के साथ और संगीतकारों के बारे में बताये।

(*ii*) डॉ० दिलीप चन्द्र बेदी

पंजाब के शास्त्रीय संगीत के उच्च श्रेणी के गायकों में श्री दिलीप चन्द्र बेदी का नाम बड़े सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है। कहते हैं कि संगीत एक जादू है जो सिर चढ़कर बोलता है। आप ने सही अर्थों में इस जादू में महारत हासिल कर ली थी।

डा० दिलीप चन्द्र बेदी का जन्म 24 मार्च, सन् 1901 ई० में पंजाब के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान श्री आनन्दपुर साहिब में हुआ। आप के पिता का नाम श्री सन्त राम जी था जो श्री गुरु नानक देव जी के घराने में से थे। बचपन में ही आपके माता-पिता की मृत्यु हो गयी। आपके मौसा जी जो उस समय प्रसिद्ध जागीरदार थे आप को अपने साथ ले गए और आपको केन्द्रीय यतीमखाना अमृतसर में भरती करवा दिया। यतीमखाना में ही उस्ताद भाई उत्तम सिंह की नज़र आप पर पड़ी। वह आप की तेज़ बुद्धि और सहजता को देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पहले आप को कीर्तन की शिक्षा देनी शुरू की फिर साथ ही उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख्याल और ध्रुपद गायन की शिक्षा देनी प्रारम्भ की।

आप के युग में संगीत को नफरत भरी नज़रों से देखा जाता था। आप 7 भाषाओं के ज्ञाता थे। संगीत के लिए आपने घर से 1200 किलोमीटर दूर जाकर शिक्षा प्राप्त की। वहीं रहकर प्रयोगी संगीत के साथ-साथ संगीत शास्त्र का भी गहरा अध्ययन किया।

सन् 1918 ई० में जालन्धर में श्री हरि वल्लभ संगीत सम्मेलन में भाग लेने आए भारत के निपुण गायक प० भास्कर राव को अपना संगीत गुरु बनाया पं० राव जी से शिक्षा लेते हुए अभी चार साल ही हुए थे कि उनकी मृत्यु हो गई। इन चार सालों में आप उच्चकोटि के संगीत विद्वानों को सुन चुके थे। आप के मन में ज्ञान लेने की इच्छा अभी शान्त नहीं हुई थी। आप ने योग्य गुरु की तालाश प्रारम्भ की। उन दिनों में बड़ौदा शास्त्रीय संगीत का महत्त्वपूर्ण केन्द्र माना जाता था। वहाँ आपने 'आफताबे मोसिकी' डॉ० फैयाज खान से संगीत सीखना शुरू कर दिया। दिलीप चन्द्र बेदी जी उन से शिक्षा पाकर एक योग्य कलाकार बन गए। बड़ौदा रहते हुए आपको उस्ताद अलादिया खान और हैदर खान से भी संगीत सीखने का मौका मिला। वहाँ रहते हुए ही आप ने अलग-अलग भाषाओं के संगीत ग्रन्थों का अध्ययन करके अपने संगीत ज्ञान के शास्त्रीय पक्ष को मजबूत किया।

सन् 1924 में पंजाब के पटियाला रियासत के महाराजा ने आपको दरबारी गायक नियुक्त किया। सन् 1925 में अखिल भारतीय संगीत परिषद् लखनऊ में आयोजित संगीत सभा में आपने अपनी गायन कला का प्रदर्शन किया और आपको स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। सन् 1927 में कराची सिन्ध संगीत कांफ्रेंस की कमेटी ने आपको महिताबे मौसिकी और सन् 1931 में गुरुकुल कांगड़ी की तरफ से आयोजित संगीत सम्मेलन में 'संगीत शृंगार' की उपाधि से सम्मानित किया गया। सन् 1934 में भी छठे अखि भारतीय संगीत परिषद् बनारस की तरफ से आपको "सर्वश्रेष्ठ ख्याल गायक" घोषित किया गया। सन् 1938 ई० में कलकत्ता कांफ्रेंस

कमेटी ने आपको किंग वाजिद अली शाह गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। इस तरह भारत के अलग-अलग राज्यों से अलग-अलग संगीत संस्थाओं, संगीत सभाओं की तरफ से आपको संगीत सुधारक, संगीत रत्न आदि उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ० दिलीप चन्द्र बेदी एक सफल गायक के साथ-साथ संगीत शास्त्र के भी निपुण विद्वान थे। आपने कई गीतों और कई नए रागों की भी खोज की। जिस तरह बेदी का ललित राग पूरे भारत में हरमन प्यारा हो गया। आपने प्राचीन ग्रन्थों को पढ़कर उनका फिर से मूल्याँकन करके समाज में उनके लेखकों को इज्जत दिलाई। आपजी की शिष्य परम्परा में पं० हुस्न लाल, विनोद कुमार, एफ० आर० गौतम, श्री भगवान दास सैनी, श्रीमती नानक वर्मा, श्री मदन लाल बाली कुमारी अनीता राय चौधरी, प्रो० प्राणनाथ शामिल थे।

वैसे तो आप मारवा, तौड़ी, रामकली, देसी, आसावरी, जोगिया, शुद्ध सारंग, चन्द्र कोस, बागेश्वरी कल्याण विहाग आदि राग आप को खास पसन्द थे। सन 1936 में पटियाला घराने के प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद बख्त उला खाँ की मौत के बाद महाराजा भूपिन्द्र सिंह ने अपनी इच्छा जाहिर की कि वह संगीतकार के रूप में काम काज सम्भालें पर आपने तन्खाह पर काम करना अपनी शान के खिलाफ समझा। सन् 1964 में आपने जयपुर से पी. एचडी. की उपाधि हासिल की। सन् 1982 में आप ने डी०लिट० की उपाधि खैरासड़ मध्य प्रदेश से प्राप्त की।

आप अपने जीवन के आखिरी सालों में भारतीय कला केन्द्र नई दिल्ली में प्रधान के पद पर काम करते रहे। दिसम्बर 1982 में प्रसिद्ध गायक और शास्त्रीय पंडित की मृत्यु हो गई। आपने संगीत जगत में जितनी सेवा की उसके लिए संगीत जगत आपका हमेशा ऋणी रहेगा क्योंकि ऐसे कलाकार संसार में बहुत कम होते हैं जो अपना सारा जीवन संगीत के नाम पर न्योछावर कर दें।

अभ्यास

1. डॉ० दिलीप चन्द्र बेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. आपके पिता जी का क्या नाम था ?
3. डॉ० दिलीप चन्द्र बेदी ने अपनी संगीत शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?
4. पटियाला रियासत के महाराजा ने आपको कब दरबारी नियुक्त किया ?
5. आपको कौन-कौन सी उपाधियों से सम्मानित किया गया ?
6. सन् 1938 में कलकत्ता सम्मेलन कमेटी ने आपको किस तरह सम्मानित किया ?
7. इनके दो शिष्यों के नाम लिखो।

अध्यापक के लिए–

विद्यार्थियों को डॉ० दिलीप चन्द्र बेदी के जीवन और गायकी की जानकारी के साथ और संगीतकारों के बारे में बताएँ।

पाठ 4

पटियाला घराना और दिल्ली घराना

घराना–साधारण भाषा में 'घराना' शब्द के अनेक अर्थ हैं जैसे–घर, कुटुम्ब, परिवार, सम्प्रदाय, वंश, परम्परा आदि। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में 'घराना' शब्द का सम्बन्ध इनमें से किसी एक या अनेक शब्दों के साथ हो सकता है। कुछ विद्वानों ने घराना शब्द का अर्थ घर माना है तो कुछ विद्वानों ने घराना शब्द का अर्थ वंश, परम्परा माना है।

संगीत में गुरु शिष्य परम्परा आदिकाल से ही चली आ रही है। हर कलाकार अपनी कला के प्रचार के लिए अपने जैसे किसी व्यक्ति की तलाश करता है। इसलिए गुरु अपनी संतान या किसी और प्रतिभाशाली शिष्य का चुनाव करता है शिष्य गुरु से शिक्षा प्राप्त करता है और गुरु शिष्य की इस परम्परा में तीन पीढ़ियों को एक घराना माना जाता है। श्री कृष्ण राव शंकर पंडित के अनुसार ''शताब्दियों या बहुत सालों की परम्परा, उच्च कोटि के गुरु और कई पीढ़ियों की गुरु शिष्य परम्परा सब मिल कर एक घराना बनते हैं''।

बाबू भाई बैंकर के ''अनुसार एक ही शैली में गाने वालों को एक ही घराना कहते हैं।''

उपरोक्त परिभाषा के अनुसार यह बिल्कुल नहीं कि एक ही घराने के कलाकारों के गायन में अन्तर नहीं हो सकता एक कलाकार अपने गुरु की शैली का अनुकरण करने के साथ–साथ अपनी प्रतिभा और गुणों को भी दिखाता है। इस कारण एक ही घराने के होने पर भी कलाकार की आवाज़ के लगाव गायन विस्तार और स्वर प्रयोग में अन्तर होता है। एक ही घराने के कलाकारों को घराने के कायदे मानने पड़ते हैं। अगर एक कलाकार अपनी प्रतिभा दिखाते हुए आलाप, बोल आलाप, तानें गमक, मींड़ आदि के प्रयोग में कुछ अन्तर दिखाता है तो भी उसे घराने के मूल सिद्धान्तों का पालन करना पड़ता है। घराने को एक वर्ग, सम्प्रदाय या जाति की तरह ही माना जा सकता है। जिस प्रकार वर्ग जाति या सम्प्रदाय की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं, उसी प्रकार गायकी की कुछ विशेषताओं के कारण ही घराने बन जाते हैं। किसी खास पहचान के कारण एक ही रीत में गाने वाले वर्ग को एक घराना माना जाता है।

संगीत के क्षेत्र में गायन के कई घराने प्रचलित हैं: जैसे :-

1. पटियाला घराना
2. दिल्ली घराना
3. ग्वालियर घराना
4. जयपुर घराना
5. किराना घराना आदि

पटियाला और दिल्ली घराने का वर्णन इस प्रकार है :

दिल्ली घराना–ख्याल गायकी का दिल्ली घराना सबसे प्राचीन है। दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह (1716 ई०) के दरबार में ख्याल गायकी का जन्म हुआ। उनकी सभा में सदारंग और अदारंग प्रसिद्ध ख्याल गायन थे और ख्याल गीतों के निर्माता भी थे।

दिल्ली के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह जफर (1837 ई०) ख्याल गायकी के पोषक और ख्याल गीतों के रचियता थे। उन्होंने 'शोख रंग' के नाम से ख्याल गीतों की रचना की। इनके गुरु अचपल (गुलाम हुसैन) दिल्ली घराने के संस्थापक माने जाते हैं। मियाँ अचपल के शिष्य तानरस खाँ दिल्ली घराने के सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे। इनको तानरस खाँ की उपाधि बादशाह ने दी थी। कुछ साल दिल्ली के दरबार में रहने के बाद तानरस खाँ ग्वालायिर के दरबार में चले गए। वहाँ उन्हें ग्वालियर के दरबारी गायक के रूप में नियुक्त किया गया। ग्वालियर से वह हैदराबाद चले गए और अन्त तक वहीं रहे। तानरस खाँ के शिष्यों में अब्दुला खाँ, अली बख्श और फतेह अली (पटियाला घराना) महबूब खाँ आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। तानरस खाँ के पुत्र उमराव खाँ थे और वह हैदराबाद में नियुक्त रहे। उमराव खाँ के पुत्र सरदार खाँ भी एक प्रसिद्ध गायक थे।

दिल्ली घराने के जो कलाकार दिल्ली में ही रहे, उन में मियाँ अलाबख्श और उनके भाई ऊमर खाँ, नन्हे खाँ, सम्मन खाँ, मम्मन खाँ और प्रसिद्ध सारंगी वादक स्व० बून्दु खाँ के नाम प्रसिद्ध हैं। मम्मन खाँ के बड़े पुत्र चाँद खाँ एक प्रसिद्ध गायक थे। और वह आकाशवाणी में नियुक्त थे। मम्मन खाँ के छोटे भाई उसमान खाँ भी एक गुणी संगीतज्ञ थे।

इस घराने के कलाकारों में अलताफ हुसैन, अमीर हुसैन, गज्जा सिंह, मस्तान सिंह (पटियाला) के नाम प्रसिद्ध हैं।

दिल्ली घराने की विशेषताएँ–इस घराने की अपनी ही गायकी है। इस की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

1. गायन में स्वरों का सुन्दर मेल बनाकर कलात्मक प्रदर्शन किया जाता है।

2. इनकी विलम्बित लय की चीज़ों में सूत, मींड, गमक का काम विशेष रूप में दिखाई देता है।

3. इस घराने की तानें कठिन और जटिल होती हैं। इनके नाम विचित्र होते हैं। जैसे सवाल जवाब की तान, उड़ान की तान, झूले की तान, कुल्फीदार तान आदि।

4. इस घराने में ख्याल की लय के अनुकूल तालों का चुनाव किया जाता है। जैसे विलम्बित लय के ख्याल के लिए तिलवाड़ा, झूमरा, सवारी ताल, मध्य लय वाले ख्याल के लिए आड़ा चौताल, फरोद रसत ताल, ध्रुत लय के लिए एक ताल, रूपक ताल आदि का प्रयोग किया जाता है।

5. इस घराने में सुर बहार और सारंगी जैसे तन्ती साजों का प्रचलन ज्यादा रहा है।

6. इस घराने में ख्यालों की बन्दिशें कलात्मक होती हैं; और उनके विशेष नाम होते हैं जैसे–पालकी के ख्याल, सवारी के ख्याल आदि।

वर्तमान समय में इस घराने के सर्वश्रेष्ठ कलाकार उसमान खाँ माने जाते हैं।

पटियाला घराना–भारतीय संगीत की परम्परा में पटियाला घराने को विशेष स्थान प्राप्त है। पटियाला घराने का आरम्भ मियाँ कालू से माना जाता है। मियाँ कालू ने संगीत की शिक्षा दिल्ली के तानरस खाँ से प्राप्त की। आप भाई मरदाना के खानदान से थे। मियाँ कालू एक प्रसिद्ध साराँगी वादक थे और गायका गोखी बाई के साथ साराँगी बजाया करते थे। आपने जयपुर घराने के उस्ताद बहिराम खाँ उस्ताद मुबारिक अली और हद्दू खाँ से भी गायन की शिक्षा प्राप्त की। मियाँ कालू ने भिन्न-2 घरानों से गायन शिक्षा द्वारा एक नए घराने की गायकी की सृजना की, जिसे पटियाला घराने की गायकी कहा जाता है।

मियाँ कालू के दो पुत्र थे अली बख्श और नबी बख्श। मियाँ कालू के शिष्यों में फतेह अली का नाम प्रसिद्ध है। अली बख्श और फतेह अली दोनों मित्र थे और इकट्ठे ही जोड़ी के रूप में गाया करते थे। इनकी जोड़ी अलिया-फत्तू के नाम से प्रसिद्ध थी। मियाँ कालू ने अपने पुत्रों और शिष्य फतेह अली को भिन्न-भिन्न शैलियों की शिक्षा देने के साथ-साथ पटियाला घराने की गायकी भी सिखाई।

लोगों में यह प्रसिद्ध था कि अलिया-फत्तू को गायकी की शिक्षा गोखी बाई से प्राप्त हुई है इसी कारण संगीत की दुनिया में, एक बाई से शिक्षा प्राप्त करने के कारण, इन्हें घटिया समझा जाता था।

इसके बाद अलिया-फत्तू ने जयपुर घराने के महान कलाकार मुबारिक अली और दिल्ली के तानरस खाँ से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद ग्वालियर घराने के हद्दू खाँ से शिक्षा प्राप्त की और इस घराने की बारीकियों को सीखा।

अलिया और फत्तू ने घराने दार कलाकारों से शिक्षा प्राप्त करके पटियाला घराने की गायकी को समृद्ध बनाया यह अपने समय के प्रसिद्ध कलाकार माने जाते हैं।

महाराजा टाँक ने अली बख्श को जरनैल और फतेह अली को करनैल की उपाधि प्रदान की। इस जोड़ी के गाने के बाद कोई भी कलाकार गाने का हौसला नहीं करता था।

जरनैल अली बख्श के पुत्र उस्ताद अखतर हुसैन थे। अखतर हुसैन खाँ पंजाब के बँटवारे से पहले महाराजा यादविन्द्र सिंह पटियाला के दरबार में गायक भी रहे।

अली बख्श के छोटे भाई नबी बख्श भी ख्याल गायक थे। उनके पुत्रों मियाँ जान और अहमद जान ने पटियाला घराने की गायकी को आगे बढ़ाया।

फतेह अली के पुत्र आशिक अली ने अपने पिता की दी गई शिक्षा के अनुसार पटियाला घराने की गायकी को नया मोड़ दिया। आशिक अली खाँ ने पंजाब अँगना की ठुमरी का निर्माण किया। आशिक अली के शार्गिदों में बड़े गुलाम अली खाँ का नाम प्रसिद्ध हुआ।

बड़े अली खाँ ने इस घराने का नाम रोशन किया। आपको ख्याल गायन के साथ-साथ ठुमरी गायन में भी योग्यता हासिल थी। आप के शिष्यों में आपके पुत्र मुनवर अली, मीरा बनर्जी, संध्या बनर्जी के नाम प्रसिद्ध हैं।

पटियाला घराने की विशेषताएँ–पटियाला घराने की गायकी बहुत ही प्रभावशाली है। इस घराने के कलाकारों की तानों की धाक पूरे भारत में जमी हुई थी। जब अली बख्श दरबार में राम दरबारी गाते थे तो ऐसा लगता था जैसे सारी वनस्पति ही दरबारी बन गई हो।

इस घराने की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. इस घराने की गायकी कलात्मकता और भावात्मकता का सुन्दर सुमेल है। जिसमें राग के स्वरूप को कायम रखा जाता है।

2. इस घराने की गायकी में अलंकारिक वक्र तानें और फिरत की तानों का प्रयोग किया जाता है।

3. इस घराने के ख्यालों की रचना संक्षेप में होती है।

4. इस घराने में मुरकी और खटके का प्रयोग बहुत किया जाता है।

5. पंजाब अंग की ठुमरी का प्रचार पटियाला घराने ने ही किया।

6. पटियाला घराने की गायकी में स्थिरता और चंचलता दोनों हैं।

हम पूरी तरह से यह कह सकते हैं कि पटियाला की गायकी पंजाब की गायकी का प्रतिनिधित्व करती है और यह पंजाब के संगीत की पहचान बन कर रह गई है।

अभ्यास

1. घराना शब्द से क्या भाव है?
2. दिल्ली घराने के संस्थापक का नाम बताओ।
3. पटियाला घराने का आरम्भ किस ने किया ?
4. दिल्ली घराने की कोई दो विशेषताएँ बताएँ।
5. पटियाला घराने के दो गायकों का नाम बताएँ।
6. पटियाला घराने की कोई दो विशेषताएँ बताएँ।
7. दिल्ली घराने के किन्हीं दो गायकों का नाम बताएँ।

अध्यापक के लिए–

अध्यापक विद्यार्थियों से घरानों की वंशावली के चार्ट बनवाएँगे।

पाठ 5

भारतीय संगीत में वाद्यों (साजों का वर्गीकरण तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनध वाद्य, घन वाद्य)

भारतीय संगीत में बजाए जाने वाले यंत्र को वाद्य या साज कहते हैं। संगीत में बजने वाले सारे ताल देने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। परन्तु कुछ साज इस तरह के हैं, जिनकी तारों को जिन सुरों में मिलाया जाता है तो वह साज उन्हीं सुरों में ही गूँजते हैं। जैसे तानपुरा, स्वरमण्डल आदि कुछ साज ऐसे ही हैं, जो केवल लय ही दिखाते हैं। जैसे खड़ताल, चिमटा, मंजीरा आदि, इन्हीं साजों के प्रयोग के आधार पर ही भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण चार भागों में किया गया है।

1. तत वाद्य

(*i*) सितार

(*ii*) वायलिन

(*iii*) सारंगी

(*iv*) संतूर

2. सुषिर वाद्य

(*i*) शहनाई

(*ii*) बाँसुरी

(*iii*) हरमोनियम

(*iv*) प्यानो

3. अवनध वाद्य

(*i*) ढोल (ढोलक)

(*ii*) तबला

(*iii*) ढोलकी

(*iv*) परवावज (मर्दंग)

4. घन वाद्य

(*i*) जलतरंग

(*ii*) खड़ताल

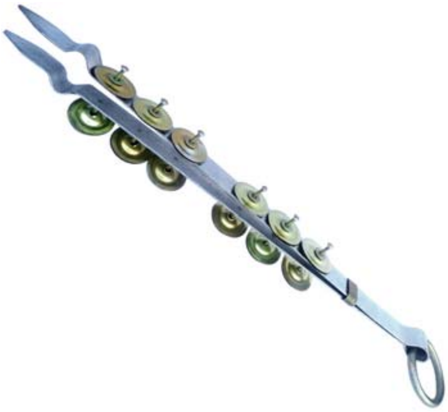

(*iii*) चिमटा

(*iv*) मंजीरा

1. तत वाद्य–जिन वाद्यों के तार चढ़ाये जाते हैं, उन वाद्यों को उनकी तारों पर रगड़, प्रहार या आघात के द्वारा ध्वनि पैदा की जाती है। सितार, सरोद, सारंगी आदि इन वाद्यों पर प्रहार करते हुए और तारों को उँगलियों से दबाते हुए बजाए जाते हैं। जैसे सितार, सरोद आदि

कुछ वाद्य इस प्रकार के हैं जिनके चढ़ाये हुए तारों के रागों के अनुसार वाद्यों में मिलाया जाता है। उसके बाद उन तारों पर किसी चीज़ द्वारा आघात करके भिन्न सुर बजाए जाते हैं। जैसे– सुरबहार स्वर मण्डल, तानपुरा आदि। तत्व वाद्यों को आगे दो भागों में बाँटा गया है।

(i) **तत वाद्य–**वह वाद्य जिनकी तारों पर किसी वस्तु द्वारा आघात या प्रहार करके ध्वनि पैदा की जाती है वह तत वाद्य कहलाते हैं, जैसे सितार, सरोद, बैंजो आदि।

(ii) **वितत वाद्य–**यह ऐसे वाद्य हैं जिनकी तारों के किसी अन्य वस्तु द्वारा रगड़ कर ध्वनि पैदा की जाती है। जैसे सारंगी, दिलरुबा आदि।

2. सुषिर वाद्य–जिन वाद्यों में हवा भरकर या फूँक मारकर स्वर निकाले जाते हैं, उन वाद्यों को सुषिर वाद्य कहते हैं, जैसे–शहनाई, बाँसुरी, हारमोनियम। यह वाद्य भी दो प्रकार के होते हैं–

(i) वह वाद्य जिनमें मुँह से हवा भरकर या फूँक मारकर शब्दों की उत्पत्ति की जाती है, जैसे बाँसुरी, शहनाई आदि।

(ii) ऐसे वाद्य जिनमें से हवा या पंखे द्वारा हवा भरकर शब्दों (स्वरों) की उत्पत्ति की जाती है, जैसे हारमोनियम, प्यानो आदि।

3. अवनध वाद्य–जिन वाद्यों के मुँह पर चमड़ा मढ़ा होता है, उनको अवनद्ध वाद्य कहते हैं। जैसे तबला, ढोलक, पखावज, ढोलकी, मृदंग आदि। इन वाद्यों का प्रयोग दो तरह से किया जाता है। एक तो गायक या वादक को संगीत करने के लिए यह वाद्य बजाये जाते हैं। दूसरा इन वाद्यों का प्रयोग एकल वादन के रूप में किया जाता है।

4. घन वाद्य–ऐसे वाद्य जिनमें आपसी रगड़ से ध्वनि पैदा की जाती है, उन्हें धन वाद्य कहते हैं। यह वाद्य लकड़ी, लोहे या पत्थर के बने होते हैं, जैसे–जलतरंग, नलतरंग, मंजीरा आदि। धन वाद्य दो प्रकार के होते हैं।

(i) भिन्न-भिन्न धातुओं से बने हुए वाद्य जिन में तालवद्ध संगीतक धुनें बजाई जाती हैं, जैसे–नलतरंग, जलतरंग, काशतरंग आदि।

(ii) कुछ धन वाद्य ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल लय देने के लिए किया जाता है, जैसे खड़ताल, मंजीरा, चिमटा आदि।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. भारतीय संगीत के साजों का वर्गीकरण कितने भागों में किया गया है ?
2. दो तत्व साजों का नाम बताओ।
3. हारमोनियम और बाँसुरी किस वर्ग में आते हैं ?
4. चमड़े से मढ़े हुए वाद्यों को क्या कहते हैं ?
5. दो घन वाद्यों के नाम बताओ।
6. चिमटा और खड़ताल किस वाद्य श्रेणी में आते हैं ?

अध्यापक के लिए–

विद्यार्थियों से वाद्यों के वर्गीकरण का चार्ट बनवाया जाए।

पाठ 6

मेरा मनपसन्द विषय–संगीत

आज दीपिका का ग्याहरवीं कक्षा में पहला दिन था। उसके मन में इस बारे बहुत ज्यादा उत्साह था। अब सारे विषय उसने अपनी पसन्द के रखे थे। सबसे ज्यादा चाव उसको संगीत के विषय की कक्षा लगाने का था। हाई स्कूल में संगीत का विषय न होने के कारण उसकी संगीत का विषय लेने की इच्छा पहली बार पूरी हुई थी।

स्कूल में तीसरा पीरियड संगीत विषय का था। दीपिका तीसरा पीरियड लगाने के लिए संगीत के कमरे में गई। उसके संगीत अध्यापिका श्रीमती सुरिन्द्र कौर बहुत ही अच्छे स्वभाव के मालिक थे। इस कक्षा में अध्यापिका ने सारे विद्याथियों की आवाज़ सुनने के लिए पहले उनसे गाने सुने। इसके बाद अध्यापिका ने सारे विद्यार्थियों को राग भैरव सुनाया। विद्यार्थी सुनकर बहुत खुश हुए। दीपिका ने अध्यापिका से पूछते हुए कहा ''मैडम, हमें आपका राग सुनने में तो बहुत अच्छा लगा है! पर इस बारे में ज्यादा समझ नहीं आया कि आपने क्या सुनाया है। अध्यापिका ने प्यार से उसके सिर पर हाथ रखकर समझाते हुए कहा, ''बेटा मैंने आपको राग भैरव सुनाया है। संगीत में जो हमने आपको सिखाना है, वह राग गायन ही है।''

दीपिका ने फिर अध्यापिका से पूछा–''मैडम जी इस राग गायन का हमें क्या लाभ होगा?''

यह बात सुनकर अध्यापिका मुस्करा दिए और कहने लगे, बेटा, इस संगीत का हमारे जीवन में बहुत ज्यादा महत्व माना गया है। पुरातन काल से ही ऋषियों-मुनियों ने संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना है। आजकल के तनाव भरे जीवन में संगीत का बहुत महत्व है। संगीत का प्रयोग आज कई बीमारियों के इलाज के रूप में भी किया जाता है। कहा जाता है कि उस्ताद सूरज खाँ ने रामपुर के नवाब को राग जै जैवन्ती सुनाकर उनकी लकवे की बीमारी ठीक कर दी थी। बाँसुरी से निकलने वाली धुनें मानसिक शान्ति प्रदान करती हैं। राग आसावरी सुनकर कम ब्लड प्रैशर के मरीज़ों को आराम मिलता है।

अध्यापिका की बातें सुनकर दीपिका उत्साह से बोल पड़ी ''मैडम जी, फिर तो संगीत का हमें बहुत ज्यादा लाभ है। हम इसका प्रयोग अस्पतालों में भी कर सकते हैं।''

अध्यापिका जी मुस्करा कर बोले, ''हाँ, तेरी यह बात बिल्कुल ठीक है। इतना ही नहीं, पौधों और पक्षियों पर भी संगीत संबन्धी प्रयोग किए गए हैं। पौधों को राग गायन सुनाया गया तो उनमें जल्दी बढ़ौतरी हुई और फूल भी जल्दी लगे। राग बागेश्वरी सुनकर गायें ज्यादा दूध देने लगीं।''

एक अन्य विद्यार्थिन अध्यापिका जी से पूछने लगी ''मैडम, जो संगीत हम ब्याह-शादियों में सुनते हैं, वह सुनकर तो कई बार सिरदर्द होने लगता है।

अध्यापिका कहने लगी, हाँ, बेटा! आपकी बात तो बिल्कुल सही है। आजकल समाज में ज्यादा शोर-गुल वाले संगीत को सुना जाता है, जोकि अत्यधिक तनाव देता है। आज के समय में हमें शास्त्रीय संगीत का सहारा लेना चाहिए। शास्त्रीय संगीत सुनकर तो हम कुछ समय के लिए अपनी बीमारी तक भूल जाते हैं। इससे हमारी स्मरण-शक्ति में बढ़ौतरी होती है। यहाँ तक कि बच्चों की पढ़ाई भी संगीत की सहायता से करवाई जा रही है। संगीत से हमारा मानसिक और शारीरिक तनाव दूर होता है। यहाँ तक कि संगीत नशे के आदी मनुष्य को नशा छुड़ाने में सहायता करता है।

मैडम जी, ''क्या हम संगीत की पढ़ाई करके कोई नौकरी भी प्राप्त कर सकते हैं?'' अनीता ने अपने मन की बात झिझकते हुए पूछी।

अध्यापिका जी उत्तर देते हुए बोली, हाँ बेटा, क्यूँ नहीं, ''संगीत की पढ़ाई करके आप अध्यापन के क्षेत्र में नौकरी, संगीत कंपनियों में और नाटक कंपनियों में नौकरी, रेड़ियो जॉकी, पार्श्व गायक के तौर पर काम कर सकते हो और संगीत अकादमी भी खोल सकते हो।'' इतने में पीरियड खत्म होने की घण्टी बज गई। अध्यापिका ने कहा ''चलो आज के लिए इतना ही काफी है।''

दीपिका खुश होकर बोली, ''मैडम जी एक तो पहले ही मैं अपना मनपसन्द विषय लेकर बहुत खुश थी। जब भी मैं किसी को गाते बजाते हुए सुनती थी तो मेरा भी दिल करता था कि मैं भी संगीत सीखूँ। आज आपने मुझे संगीत के बारे में इतना कुछ बताकर मेरी रुचि को और ज्यादा बढ़ा दिया है।

इसके बाद सारे विद्यार्थी अपना अगला पीरियड लगाने के लिए चले गए।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. अपने मनपसन्द विषय का नाम बताओ।
2. संगीत का कोई एक लाभ बताओ।
3. संगीत की शिक्षा करके किस–किस क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता है ?
4. पशु–पक्षियों पर संगीत का असर कैसे होता है ?
5. छोटे बच्चों को शिक्षा देने में संगीत कैसे सहायक है ?

अध्यापक के लिए–

अध्यापक विद्यार्थियों को इस विषय पर चर्चा करने को कहें कि ''मैंने संगीत विषय क्यों लिया।''

पाठ 7

नाद-परिभाषा, भेद

परिभाषा–

न नादेन बिना गीत न नादेन बिना स्वर :
न नादेन बिना ज्ञान न नादेन बिना शिव :
(मतंग)

नाद के बिना ना तो गीत का जन्म होता है न ही स्वर का। नाद के बिना न ही ज्ञान प्राप्त होता है न ही कल्याण हो सकता है।

रत्नाकर जी के अनुसार 'न' और 'द' नकार-प्राण और दकार-आग (शक्ति) के मेल से बना है, जो सारे ब्रह्माण्ड का आधार बन गया। नाद से भाव वह आवाज़ जो संगीत उपयोगी हो।

नाद नियमित और स्थिर कम्पन वाली मीठी आवाज़ होती है, जो संगीत उपयोगी हो। नाद संगीत का मुख्य तत्व है जिसके बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

कोई भी आवाज़ मीठी और खुशी भरी हो वह नाद का रूप ले लेती है और संगीत का प्राण बन जाती है। मधुर आवाज़ के साथ ही संगीत का निर्माण हुआ है। इसका प्रभाव मनुष्य पर ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों पर भी पड़ता है। आवाज़ दो प्रकार की होती है।

1. जिसको सुनना अच्छा नहीं लगता, उसे शोर कहते हैं।
2. जिससे मन खुशी से भर जाए, आनन्द आने लगे, जो मन को छु ले।

नाद के भेद–

नाद के दो भेद होते हैं–

1. आहत नाद
2. अनाहत नाद

1. आहत नाद–यह नाद स्थूल वस्तुओं से उत्पन्न दो वस्तुओं के टकराने या रगड़ से जो आवाज़ होती है वह आहत नाद कहलाती है। जैसे–ताली बजाना, वायलन बजाना। इस नाद को तीन भागों में बाँटा जाता है–

(*i*) एक वस्तु का दूसरी वस्तु से टकराना जैसे–ताल बजाना या सितार पर मिज़राब का टकराना।

(*ii*) दो वस्तुओं के टकराने से जो नाद उत्पन्न हो जैसे वायलन या सारंगी।

(*iii*) छेद से हवा के तेजी से निकलने से पैदा हुई जैसे बाँसुरी, शहनाई और हारमोनियम।

2. अनाहत नाद–बिना किसी रगड़, चोट, अघात से जब नाद पैदा होता है, उसको अनाहत नाद कहते हैं। ऋषि इसको 'अनाहद' नाद भी कहते हैं। मोक्ष की प्राप्ति के लिए वह उपासना करते थे। यह नाद बहुत सूक्ष्म है। इसको कानों से नहीं सुना जा सकता। कानों में उँगली डालकर सां-सां की आवाज़ को महसूस किया जा सकता है। यह नाद मोक्ष की मुक्ति के लिए सहायक है पर रन्जक नहीं है। यह नाद संसारिक व्यवहार के लिए नहीं है।

नाद के लक्षण :

(*i*) नाद का छोटा – बड़ापन (Intensity)

(*ii*) नाद का ऊँचा – नीचापन (Pitch)

(*iii*) नाद की जाति (Timber)

(*i*) नाद का छोटा-बड़ापन – आवाज़ का कम या अधिक सुनाई देना ही नाद का छोटा–बड़ापन कहलाता है। कम ऊँची बोलने से आवाज़ नजदीक और ज्यादा ऊँची बोलने से आवाज़ दूर तक सुनाई देती है। हारमोनियम बजाते हुए पंखे से हवा कम भरने से आवाज़ धीरे और ज्यादा से आवाज़ ऊँची सुनाई देती है, इसी को आवाज़ का छोटा या बड़ापन कहा जाता है।

(*ii*) नाद का ऊँचा-नीचापन – नाद का दूसरा गुण नाद का अपने स्थान से ऊँचा और नीचा होना है। स से रे स्वर ऊँचा होता है, रे से ग, ग से म। इसी तरह म से नी नीचा स्वर है और नी से ध और ध से प। नाद अपने स्थान से ऊँचा भी हो सकता है और नीचे भी। इसी को ही संगीत में नाद का ऊँचा–नीचापन कहा जाता है।

(*iii*) नाद की जाति – यह नाद की तीसरी विशेषता है। इसी विशेषता से पता चलता है कि आवाज़ किसकी है। यह नाद आवाज़ को पहचानने में मदद करता है। साज को देखे बिना ही उसकी आवाज़ सुनकर पहचानना कि यह सितार की आवाज़ है, हारमोनियम की, वायलन की या किसी और साज की।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. संगीत उपयोगी आवाज़ किसको कहते हैं ?
2. नाद की किस्मों के नाम लिखो।
3. आहत नाद किसे कहते हैं ?
4. अनाहत नाद किसे कहते हैं ?
5. जो आवाज़ धीरे सुनाई दे उसे नाद का कौन–सा पन कहते हैं ?

अध्यापक के लिए–

साज़ों की सहायता से और कानों पर उँगली रखकर विद्यार्थियों को नादों के बारे में जानकारी दीजिए।

पाठ 8

ख्याल शैली की खोज (आविष्कार)

ख्याल शैली के आविष्कार के बारे में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं। विश्वास किया जाता है कि 15वीं सदी में जोनपुर के राजा सुलतान हुसैन शरकी (1458-1480) ने इस का आविष्कार किया। बाद में सदा रंग और अदा रंग ने सैंकड़ों रागों की रचना करते हुए कई-कई शार्गिद तैयार किए। दूसरे मतानुसार अलाऊदीन खिलजी के दरबारी गायक अमीर खुसरो को इसका जन्मदाता मानते हैं।

प्रो. तारा सिंह के अनुसार ''गुरु गोबिन्द सिंह रचित ख्याल पहली बार 17वीं सदी में मिलता है। इसलिए भारतीय शैली की ईजाद गुरु गोबिन्द सिंह जी ने की। आधुनिक काल में प्रमुख ख्याल गायकों में पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. शंकर राव व्यास और उस्ताद अमीर खां के नाम सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हैं।

इसके प्रमुख घराने हैं : लखनऊ, दिल्ली, ग्वालियर, आगरा, जयपुर, पटियाला और किराना घराना।

वाद्य यन्त्रों में भी आजकल ज्यादा ख्याल अंग या गायिकी अंग पसन्द किया जाता है।

ख्याल शैली की खोज और प्रकार :

ख्याल–गायन शैली जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी और तराना में सबसे अधिक ख्याल गायन प्रचलित है। ख्याल शब्द फारसी भाषा में से लिया गया है जिसका अर्थ है विचार या कल्पना। कल्पना का ज्यादा महत्व होने के कारण ख्याल गायन शैली को लोकप्रियता प्राप्त है।

''गायक जब राग के नियमों का पालन करते हुए किसी तालबद्ध गीत को आलाप और तान द्वारा पेश करता है तो उसे ख्याल कहते हैं। ख्याल गाते समय गायक अपनी भावनाओं और अनुभवों

को गमन, मींड, खटका और बोलतान आदि क्रियाओं की सहायता से प्रकट करता है। ख्याल में एक ही राग को बार-बार सुनने पर भी हर बार नए आनन्द का अनुभव होता है।

ख्याल शैली के गीत बहुत छोटे होते हैं। इन गीतों को स्थाई और अन्तरा दो भागों में बाँटकर गाया जाता है। इन गीतों में आमतौर पर श्रृंगार, शान्त और करुणा रस प्रमुख होते हैं। ख्याल गायिकी के विषय धार्मिक ऋतुओं पर आधारित और कुछ खास उत्सवों पर गाये जाते हैं। इनका विषय कृष्ण लीलाओं पर भी आधारित होता है। ख्याल पंजाबी, बुन्देलखण्डी, बृज और मारवाड़ी भाषाओं में अधिक गाए जाते हैं। इसमें शब्दों के साथ-साथ सुर और ताल को भी महत्व दिया जाता है। ख्याल शैली में तीन ताल, एक ताल, आड़ा चार ताल, झुमरा, तिलवाड़ा आदि तबले की तालों का प्रयोग किया जाता है।

ख्याल शैली के प्रकार

ख्याल दो प्रकार के होते हैं-

1. बड़ा ख्याल या विलम्बित ख्याल
2. छोटा ख्याल या द्रुत ख्याल

1. बड़ा ख्याल या विलम्बित ख्याल : यह विलम्बित लय में गाया जाता है। इसकी प्रकृति गम्भीर होती है। इनके गीतों में श्रृंगार, शान्त और करुणा रस की प्रधानता होती है। इस ख्याल में मुरकी, मींड-ताल, बोल ताल का अधिक प्रयोग होता है। इसको छोटा ख्याल भी कहा जाता है। बन्दिश को स्थाई और अन्तरा दो भागों में गाया जाता है। द्विगुण, चतुरगुण, आठ गुण भिन्न-भिन्न लयकारों में तानों का प्रयोग किया जाता है। इसकी बन्दिश के साथ झुमरा, एकताल, तिलवाड़ा, आड़ा चार ताल आदि तालों का प्रयोग किया जाता है।

2. छोटा ख्याल या द्रुत ख्याल : इसको छोटा ख्याल भी कहा जाता है। इसकी बन्दिश लय मध्य या द्रुत लय होती है। इसे दो भागों में बाँटा जाता है। स्थाई और अन्तरा। इसकी प्रकृति चंचल होती है। इसके गीतों में श्रृंगार और करुणा रस की प्रधानता होती है। द्रुत ख्याल में अलंकार, बोल ताल, बोल, आलाप, खटका, मुरकी आदि का प्रयोग ज्यादा होता है।

आधुनिक युग को ख्याल का युग (काल) कहा जाता है। क्योंकि आधुनिक काल में शास्त्रीय गायन शैली में ख्याल शैली सबसे अधिक प्रचलित है।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. ख्याल शब्द का क्या मतलब है ?
2. ख्याली गायिकी के दो भागों के नाम बताओ।
3. ख्याल शैली की खोज किसने की ?
4. छोटे ख्याल की लय कैसी होती है ?
5. बड़ा ख्याल किस लय में गाया जाता है ?
6. बड़े ख्याल में कितने गुणों की तानें गाई जाती हैं ?
7. छोटे ख्याल की प्रकृति कैसी होती है ?

अध्यापक के लिए–

अध्यापक विद्यार्थियों को बड़ा ख्याल और छोटा ख्याल गाकर सुनाएँ और उसका अभ्यास करवाएँ।

पाठ 9

संगीत का साज–तानपुरा : इतिहास, अंग वर्णन

प्राचीन काल में बहुत सारे वाद्यों का निर्माण हुआ। मूर्तियों, चित्रों में बहुत सारे वाद्य जैसे बांसुरी, वीणा, सारंगी, पखावज देखने को मिलते हैं। एकतारा भारतीय लोक वाद्य में बहुत ही प्रसिद्ध वाद्य है। तूम्बी एक छोटे आकार का वाद्य होता है जो पंजाबी लोक गायक, लोकगीत गाते समय प्रयोग में लाते हैं। परमात्मा की भक्ति करते साधु-संगतों, भक्तों द्वारा भी यह प्रयोग किया जाता था। धीरे-धीरे चार तारों वाला वाद्य, जिसे तानपुरा कहा जाता है, प्रचार में आया।

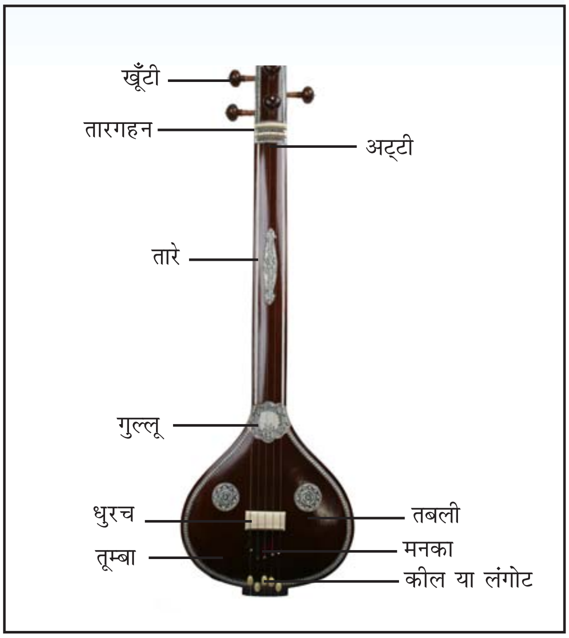

इतिहास

प्राचीन शास्त्रकारों के अनुसार 'तुम्बरु' नामक गन्धर्व ने इसका आविष्कार किया। धीरे-धीरे तुम्बरु से तम्बरु और फिर तम्बरु से तम्बूरा बन गया। आधुनिक काल में तानपुरा के नाम से जाना जाने लगा। यह एक तन्त्रीय विद्या का विकसित रूप है। यह वाद्य स्वर देने के काम आता है। गायन के साथ-साथ यह नृत्य और वादन में भी संगत के रूप में प्रयोग में आता है। आज यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का जरूरी और महत्वपूर्ण अंग बन गया है। इसकी मधुर और सरस मीठी आवाज़ गायक को कला का प्रदर्शन करने के लिए मजबूर कर देती है।

तानपुरे के भाग

1. तूम्बा	2. तबली	3. डाँड	4. घुड़च	5. गुल्लू
6. तारदान	7. खूँटियाँ	8. मनका	9. तार	10. धागा
11. लन्गोट				

1. तूम्बा : यह कद्दू का बना होता है। एक तरफ से काटकर चपटे आकार में इसे बनाया जाता है।

2. तबली : तूम्बे के कटे हुए हिस्से को तबली जो कि लकड़ी की बनी होती है, से ढका जाता है।

3. डाँड : लकड़ी का खोखला डन्डा तूम्बे के साथ जुड़ा होता है, इसको डान्ड कहा जाता है।

4. घुड़च : तबली के ऊपर रखी हुई हाथी दाँत की छोटी-सी चौंकी को घुड़च कहा जाता है।

5. गुल्लू : डान्ड और तूम्बा जहाँ जोड़े जाते हैं, उस जगह को गुल्लू कहा जाता है।

6. तारदान : डाँड के ऊपर हाथी दाँत के छेद वाली पट्टी जिसमें से तार निकाल कर खूँटियों से बाँधे जाते हैं, उस को तारदान कहा जाता है।

7. खुँटियाँ : चारों तार चार खुँटियों से बन्धे होते हैं। इनसे तार कसे और ढीले किये जाते हैं।

8. मनका : तारों में चार मोती, तारों को सुर में करने के लिए डाले जाते हैं, जिनको मनका कहा जाता है।

9. तार : तानपुरे में चार तारें होती हैं। इन तारों को म़ स स़ सं या प़ स स स़ से मिलाया जाता है।

10. धागा : घुड़च के ऊपर तारों के नीचे चार सूत के धागे स्वरों के सूक्ष्म अन्तर को ठीक करने के लिए लगाए जाते हैं।

11. लन्गोट : जिस पर तार कसे जाते हैं, उसे लन्गोट कहा जाता है। तानपुरा में चार तार होते हैं। पहला तार लोहे का होता है। इसको मन्द सप्तक के प या म स्वर से मिलाया जाता है। बीच के दो तारों को जोड़ की तार कहा जाता है। इसको मध्य सप्तक के शड़ज (स) के साथ मिलाया जाता है। चौथा तार पीतल का होता है। इसको मन्द्र सप्तक के 'स' सुर के साथ मिलाया जाता है। तार को बार-बार बजाने से कम्पन पैदा होता है और बहुत ही मीठी ध्वनि उत्पन्न होती है जो संगीतमयी वातावरण बनाने में सहायक होती है।

तानपुरे की बैठक

तानपुरा छेड़ने का ढंग गायकों का अलग-अलग होता है। कई गायक इसको एक घुटना खड़ा करके दूसरी टाँग (लात) को मोड़कर बाएँ हाथ से बजाते हैं। तो कई ज़मीन पर लिटाकर चौकंड़ी मारकर बजाते हैं। तार छेड़ते हुए मध्यमा और पहली अँगुली का प्रयोग किया जाता है।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. तानपुरे का आविष्कार किसने किया ?
2. तानपुरे में कितनी तारें होती हैं ?
3. तानपुरे का गोल हिस्सा किस से बना होता है ?
4. तानपुरे के दो भागों के नाम बताओ।
5. तानपुरे की पहली ताल किस चीज़ से बनी होती है ?
6. डान्ड से क्या भाव है ?
7. तानपुरे की तारें किससे बाँधी जाती हैं ?

अध्यापक के लिए–

1. विद्यार्थियों को तानपुरे के भागों की जानकारी देनी।
2. तानपुरे के भागों का चार्ट बनवाना।

क्रियात्मक भाग

पाठ 10

अलंकार

थाट बिलावल

1. आरोह – स रे ग म प ध नी सं
   अवरोह – सं नी ध प र्म ग रे स
2. आरोह – स रे ग, रे ग र्म, ग म प, म प ध, प ध नी, ध नी सं
   अवरोह – सं नी ध, नी ध प, ध प म, प र्म ग, म ग रे, ग रे स
3. आरोह – स रे ग म, रे ग म प, ग म प धा, म प ध नी, प ध नी सं
   अवरोह – सं नी ध प, नी ध प म, ध प र्म ग, प म ग रे, म ग रे स
4. आरोह – स ग, रे म, ग प, म ध, प नी, ध सं
   अवरोह – सं ध, नी प, ध म, प ग, म रे, ग स
5. आरोह – स रे स ग, रे ग रे म, ग म ग प, म प म ध, प ध प नी, ध नी ध सं
   अवरोह – सं नी सं ध, नी ध नी प, ध प ध म, प म प ग, म ग म रे, ग रे ग स

थाट कल्याण

1. आरोह – स रे ग र्म प ध नी सं
   अवरोह – सं नी ध प, र्म ग रे स
2. आरोह – स रे ग, रे ग र्मे, ग र्म प, र्म प ध, प ध नी, ध नी सं
   अवरोह – सं नी ध, नी ध प, ध प र्म, प र्म ग, र्म ग रे, ग रे स
3. आरोह – स रे ग र्म, रे ग र्म प, ग र्म प ध, र्म प ध नी, प ध नी सं
   अवरोह – सं नी ध प, नी ध प र्म, ध प र्मे ग, प र्म ग रे, र्म ग रे स
4. आरोह – स ग, रे र्म, ग प, र्म ध, प नी, ध सं
   अवरोह – सं ध, नी प, ध र्म, प ग, र्म रे, ग स
5. आरोह – स रे स ग, रे ग रे म, ग र्म ग प, र्म प र्म ध, प ध प नी, ध नी ध सं
   अवरोह – स ध नी ध, नी पध प, धर्म प र्म, प ग र्म ग, म रे ग रे, ग स रे स

पाठ 11

राग कल्याण

साधारण जान पहचान–

थाट – कल्याण

वादी स्वर – ग

संवादी स्वर – नी

जाति – सम्पूर्ण

समय – रात्रि का पहला पहर

विस्तारसप्तक – मन्दर से तार सप्तक

न्यास के स्वर – रे, ग, प, नी

प्रकृति – गम्भीर

मिलते जुलते राग – यमन कल्याण

स्वर – मं तीव्र, बाकी सारे शुद्ध

आरोह – नी रे ग, मं प ध नी सं या स रे ग मं प ध नी सं

अवरोह – सं नी ध प मं ग रे स

पकड़ – नी रे ग, प रे ग, रे नी़ रे स

यह अपने थाट का आश्रय राग है। यह राग पूर्वांगवादी राग है। यह राग ज्यादातर मन्दर नी से शुरू करते हैं। जैसे–नी़ रे ग रे, नी़ रे ग म आदि। इस राग में नी़ रे ग, प रे ग, स्वर समूह बार-बार लगाए जाते हैं। इस राग में छोटा ख्याल और बड़ा ख्याल गाए जाते हैं। कल्याण के कई प्रकार होते हैं। जैसे–शुद्ध कल्याण, पूरियाँ कल्याण, जैत कल्याण आदि।

आलाप –

1. स नी़ रे ऽ स, नी़ रे ग, ग रे नी़ रे स
2. स नी , ध नी़ रे ग रे, ग मं प रे, ग ऽ रे, नी़ रे स
3. ग मं ध नी मं ध नी सं, सं ऽ ऽ सं नी रे सं, सं नी ध प, मं ध नी, ध प, मं ध प, मं ग, प रे ग, रे नी़ रे स

राग कल्याण-बड़ा ख्याल–(एक ताल)

स्थाई– वारी-वारी मैं जाऊँगी प्रीतम पर,
जब आवेंगे पिया, मोरे घरवा

अन्तरा– घर आँगन सब सजाऊँगी मै तब,
और डारूँगी फुलवन को हरवा।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थाई–								नी़रे	गरे	स	नी़ध़
								वाऽ	ऽरी	वा	रीमैं
नी़	–	रे	स	नी़रे	म॑	ग	रेस	नी़	ध	प	म॑ ग
जा	ऽ	ऊँ	गी	प्रीऽ	त	म	पर	ज	ब	आ	वेऽ
म॑	–	रेम॑	ग	नी़रे	गरे	नी़रे	स				
गे	ऽ	पिऽ	याऽ	मोऽ	ऽरे	घर	वा				
अन्तरा								म॑ध	नीध	सं	रें
								घ र	आ ऽ	ग	न
सं	सं	नी	रें	गं	रें	संनी	धप	ध	म॑ध	सं	नीध
स	ब	स	जा	ऊँ	गी	मैं ऽ	तब	औ	ऽ र	डा	रूँगी
नी	ध	प	म॑	रे	गम॑	रेग	रेस				
फु	ल	व	न	के	ऽऽ	हर	वाऽ				

राग कल्याण (बड़ा ख्याल)

तानें

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नी़रेगरे	नी़रेसे	नी़रेगमं	पमंगमं	गरेनी़रे	गमंपध	पमंगरे	नी़रेस–	वाऽ	ऽरी	वा	रीमैं
गमंपग	मंपमंप	गमंपमं	गरेस–	धनींसंध	नीसंनीसं	नीधपमं	गरेस	वाऽ	ऽरी	वा	रीमैं
गमंधनी	रेंगंरेंस	नीधपमं	गरेस	गमंपमं	गरेस	नी़रेगम	पमंगरे	वाऽ	ऽरी	वा	रीमैं
नी़रेस–	रेगमं–	गमंप–	मंधप–	पधनी–	धनीसं–	नीधपमं	गरेस–	वाऽ	ऽरी	वा	रीमैं
संनीधप	मंपगमं	पधमंप	धनीसं–	नीधपमं	गरेस–	नीधपमं	गरेस–	–	–	–	

राग कल्याण (छोटा ख्याल)

तीन ताल (मध्य लैय)

स्थाई– ऐरी आली, प्या (पियां) बिन सखी
कल ना परत मोहे घडी पल छिन, दिन

अन्तरा– जग मे प्या (पिया) प्रदेश गवन कीनो
रतीयां कटत मोहे, तारे गिन गिन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
		स्थाई						नी	ध	प	–	–	रे	–	स
								ऐ	ऽ	री	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ली
ग	रे	ग	ग	–	–	प	प	ग	म॑	ग	म॑	प	ध	प	प
पि	यां	बि	न	–	–	स	ख़ी	क	ल	ना	प	र	त	मो	हे
नीध	नी	प	प	रे	रे	स	स								
घऽ	डी	प	ल	छि	न	दि	न								
		अन्तरा													
								प	प	सं	सं	स	–	सं	सं
								ज	ब	मे	पि	यां	ऽ	प	र
सं	सं	नी	ध	नी	ध	प	प	प	गं	रें	सं	नी	ध	प	प
दे	ऽ	श	ग	व	न	की	नो	र	ती	यां	क	ट	त	मो	हे
ध	नी	ध	प	रे	रे	स	स								
ता	ऽ	ऽ	रे	गि	न	गि	न								

राग कल्याण (छोटा ख्याल)

तानें

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
नी़रे	गरे	नी़रे	स–	पम॑	गम॑	गरे	स–	ए	ऽ	री	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ली
नी़रे	गम॑	धनी	सरे	सनी	धप	म॑ग	रेस	ए	ऽ	री	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ली
गग	रेस	नी़रे	गम॑	पध	पम॑	गरे	स–	नीनी	धप	म॑ध	नीसं	नीध	प म॑	ग रे	स–
गम॑	पग	म॑प	म॑प	गम॑	पम॑	गरे	स–	धनी	सध	नीस	नीसं	नीध	प म॑	ग रे	स–

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. राग कल्याण का थाट बताओ।
2. राग कल्याण का आरोह अवरोह बताओ।
3. राग कल्याण को कब गाया बजाया जाता है ?
4. राग कल्याण में कौन-से स्वर लगते हैं ?
5. राग कल्याण के वादी संवादी स्वर बताओ।
6. राग कल्याण की जाति बताओ।
7. राग पहचानो–

   नी़ रे ग म॑, प रे, ग रे, नी़ रे स

अध्यापक के लिए–

विद्यार्थियों को हरमोनियम के ऊपर राग कल्याण बजाना सिखाया जाए।

पाठ 12

राग अलैहिया बिलावल

साधारण जान पहचान–

थाट – बिलावल

वादी स्वर – ध

संवादी स्वर – ग

जाति – साड़व, सम्पूर्ण

समय – दिन का पहला पहर

स्वर – दोनों निशाद, बाकी शुद्ध

विस्तार सप्तक – मध्य से तार सप्तक

न्यास के स्वर – स, रे, प

प्रकृति – गम्भीर

मिलते जुलते राग – बिलावल

आरोह – स, ग रे ग प, ध नी सं

अवरोह – सं नी ध प, ध नी ध प, म ग म रे स

पकड़ – ग रे, ग प, म ग म रे, ग प ध, नी ध प

यह राग बिलावल का ही एक प्रकार है। यह उतरांगवादी राग है। इस राग के अवरोह में दोनों निशाद एक विशेष ढंग से प्रयोग किए जाते हैं। जैसे–सं नी ध प, ध नी ध प। आरोह में रे और अवरोह में ग स्वर ज्यादातर वक्र लगते हैं। जैसे–ग म रे, ग रे ग प यह बिलावल का विशेष भाग है।

आलाप–

1. स, ग रे, ग प, ग म ग रे, ग म रे स
2. स रे ग, प, ध नी ध प, म ग म रे, स रे ग प, म ग म रे स
3. ग प ध नी सं, रें सं सं रें गं मं रें सं, नी ध प, ध नी ध प, ग म रे, स

राग अलैहिया बिलावल–(बड़ा ख्याल)–ताल तिलवाड़

स्थाई– दैया कहाँ गए लोग ब्रज के बसैया।

अन्तरा– न मोरे पँख न पायल पास,
न कोई सुध को ले वैया।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई–							सं	धनी	धप	म	पम				
											दै	ऽऽ	आऽ	ऽ	ऽक
ग	रे	स	–	रे	ग	ममगरे	ग	ग	प	प	–	पनी	धनी	सं	–
हाँ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ये	ऽऽऽऽ	ऽ	लो	ऽ	ग	ऽ	ब्रज	केऽ	ऽ	ऽ
सं	सं	–	–	ध	नी़	ध	प	ध	ग	म					
ब	सै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ					
×				2				0				3			
अन्तरा–									प	ऽ	नी	नी			
												ना	ऽ	मो	रे
सं	–	रें	सं	सं	रें	ग	मं	गं	रे	सं	–	ध	धनी	धप	मगमरे
पं	ऽ	ख	न	पा	ऽ	य	ल	पा	ऽ	स	ऽ	ना	ऽऽ	कोऽ	ईऽऽऽ
ग	प	नी	धनी	सं	सं	ध	नीप	ध	ग	म	सं				
सु	ध	को	लेऽ	वै	ऽ	या	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दै				
×				2				0				3			

राग अलैहिया बिलावल (बड़ा ख्याल)

तानें

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
											दै	ऽऽ	याऽ	ऽ	ऽक
सरेगप	मगमरे	गपधनी	धपमग	मरेगप	धनीसरें	संनीधप	मगमरे	गपथप	मगमरे	गरेस–					
गपधनी	संनीधप	धनीधप	मगमरे	गपधनी	संनीधप	मगमरे	गपधनी	संरेसंनी	धपमग	मगरेस	दै	ऽऽ	याऽ	ऽ	ऽक
नीनीसंसं	गरेगरे	संनीसंनी	धपधप	ध नी नी नी	धपपग	संनीधप	मगमरे	गपधप	मगमरे	गरेस	दै	ऽऽ	याऽ	ऽ	ऽक
सरे	म–	गरे	म–	पपप	धनी	स–	स–	पमम	गरेगप	नींनींस	दै	ऽऽ	याऽ	ऽ	ऽक

राग अलैहिया बिलावल–(छोटा ख्याल)–तीन ताल

स्थाई– सुमिरण कर मन राम नाम को
जो कुछ होवे भला होवे बन्दे।

अन्तरा– एक दिन उस घर जाना होगा
सोच समझ कर रहना बन्दे।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
				स्थाई–				ध	नी़	ध	प	मग	रेग	प	म
								सु	मि	र	ण	कऽ	रऽ	म	न
ग	–	रेस	गम	प	न	गरे	स	ग	–	म	रे	ग	प	नीध	नी
रा	ऽ	मऽ	नाऽ	ऽ	म	कोऽ	ऽ	जो	ऽ	कु	छ	हो	ऽ	वे ऽ	ऽ
सं	सं	–	धनी	संरें	सं	धप	मग								
भ	ला	ऽ	होऽ	ऽऽ	वे	बन्ऽ	देऽ								
×				2				0				3			
				अन्तरा–				ग	ग	प	प	प	नीध	नी	नी
								ए	क	दि	न	उ	सऽ	घ	र
सं	–	सं	–	धनी	संरें	नी	सं	सं	गं	रें	मं	गं	रें	सं	सं
जा	ऽ	ना	ऽ	होऽ	ऽऽ	गा	ऽ	सो	ऽ	च	स	म	झ	क	र
ध	नी	ध	प	पध	नी़ध	पम	ग								
र	ह	ना	ऽ	बन्ऽ	ऽऽ	देऽ	ऽ								
×				2				0				3			

अलैहिया राग बिलावल (छोटा ख्याल)

तानें

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
सरे गप मग रेस	संनी धप मग रेस	सु मि र ण	कऽ रऽ म न
गप धनी संनी धप	धनी धप मग रेस	स मि र ण	कऽ रऽ म न
सरे गप मग मरे	गप धनी धप मग	मरे गप धनी संरें	संनी धप मग रेस (सम)
गप धनी संनी धय	धनी धप मग मरे	गप धनी संनी धप	मग मरे गरे स (सम)

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. अलैहिया बिलावल राग के थाट का नाम लिखो।
2. अलैहिया बिलावल राग के साथ मिलते-जुलते राग का नाम लिखो।
3. इस राग के गाने बजाने का समय क्या है ?
4. राग की पहचान करो :
   नी ध प, ध नि ध प, म ग म रे स
5. इस राग की प्रकृति कैसी है ?
6. राग अलैहिया बिलावल का वादी स्वर क्या है ?
7. इस राग की जाति क्या है ?
8. राग अलैहिया बिलावल में कौन-से स्वर का प्रयोग होता है ?

अध्यापक के लिए–

विद्यार्थियों के राग के बारे में समझा कर बड़ा ख्याल और छोटा ख्याल गाकर सिखाया जाए।

पाठ 13

राग वृन्दावनी सारंग

साधारण जान पहचान–

थाट – काफी

वादी स्वर – रे

संवादी स्वर – प

जाति – ओड़व ओड़व

समय – दोपहर (दिन का दूसरा पहर)

स्वर– दोनों निशाद ग, ध वर्जित

विस्तार सप्तक – मध्य से तार सप्तक

न्यास के सुर – स, रे, प

प्रकृति – चँचल

मिलते-जुलते राग – सुर मलार

आरोह – ऩी स, रे म प नी सं

अवरोह – सं नी प न रे स

पकड़ – ऩी स रे, म रे, प म रे, नी स

इस राग की रचना उत्तर प्रदेश के एक लोकगीत के आधार पर हुई। इस राग में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल और तराने गाये जाते हैं, पर ठुमरी नहीं गाई जाती। सारंग के कई प्रकार होते हैं; जैसे-शुद्ध सारंग, गौड़ सारंग, मियाँ की सारंग, बड़हंस सारंग, मध्यमाँद सारंग आदि।

आलाप–

1. स, ऩी स रे, रे म रे, प म रे, स रे म रे, ऩी स
2. ऩी स रे, म रे, म प नी प, म रे रे म प, म रे, ऩी स
3. म प नी सं, नी सं, म प नी सं रे नी स, ऩी प म प म रे, स रे ऩी स

राग वृन्दावनी सारंग (बड़ा ख्याल-एक ताल)

स्थाई– काहे हो तुम कीन्ही हम संग इतनी निठुराई।

अन्तरा– ओरन के संग रात राम रंग,
मेरी सुध दीनी बिसराई।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
		स्थाई–								नी़ प म	रे स
										काऽऽ	हेऽ
रे	–	स	नी़ स	रे	म प	रे	–	म	प	नी़ प	नी
हो	ऽ	तु	मऽ	की	ऽऽ	नहीं	ऽ	ह	म	सं	ग
–	सं	नी़	प	रे	म	प म	रे	स	स		
इ	त	नी	ऽ	नि	ठु	ऽऽ	रा	ई	ऽ		
		अन्तरा–								म प	नी़ प, नी
										ओऽ	रऽ न,
सं	सं सं	नी	सं	रें	म रें	सं	नी सं	नी	प	म रे	नी प
के	सं ग	र	ह	त	रा ऽ	ऽ	म रं	ग	ऽ	मेऽ	ऽऽ
प	–	म प	नीसं	नी	प	प	म	रे	स		
री	–	सुध	दीऽ	नी	ऽ	बिस	रा	ऽ	ई		

राग वृन्दावनी सारंग (बड़ा ख्याल)

तानें

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1. ऩीसरेम	रेसनीस	नीसरेम	पमरेम	पनीवम	रेमपम	रेमपम	रेसनीस	नीसरेस	नीपऩीस	काऽऽ	हेऽ
2. ऩी स रे म	प नी सं रे	स नी प म	रे न प म	रे म रे स	नी स रे म	प नी सं रे	सं नी प म	रे म प म	रे स ऩी स	काऽऽ	हेऽ
3. ऩी स रे म	रे स प नी	सं रे सं नी	प म रे स	रे म रे स	रे–रे म	रे म रे–	रे म रे स	ह	म	संऽ	ग
4. ऩी स रे स	रे म रे स	नी सं नी प	नी ध म प	रे म रे स	रे सं रे स	नी प म प	रे म रे स	रे...	रे म रे स	काऽऽ	हेऽ

राग वृन्दावनी सारंग
छोटा ख्याल (तीन ताल)

स्थाई– बन बन ढूँढन जाऊँ।
कित हूँ छिप गए कृष्ण मुरारी।

अन्तरा– शीश मुकुट अर कानन कुण्डल।
बन्सी धर मन रंग फिरत गिरधारी।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	स्थाई–							सं	सं	रें	सं	नी़	–	प	म
								ब	न	ब	न	ढूँ	ऽ	ढ	न
	–	म	–	प	–	–	–	म	प	सं	–	नी़	प	म	रे
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	कि	त	हूँ	ऽ	छि	प	ग	ये
रे	प	नी	प म	रे	–	–	स								
कृ	ऽ	ष्ण	मुऽ	रा	ऽ	ऽ	री								
	अंतरा–														
म	–	प	प	नी	प	नी	नी	सं	–	सं	सं	नी	गं	सं	सं
शी	ऽ	श	मु	कु	ट	औ	र	का	ऽ	न	न	कु०	ऽ	ड	ल
नी	सं	रें	–	मं	मं	रें	सं	नी	सं	रें	सं	नी	सं	नी	प
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न	रं	ऽ	ग	फि	र	त	गि	र
मप	नीसं	रेंमं	रेंसं	नीसं	रेंसं	नी	प								
धा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ								

तानें

राग वृन्दावनी (छोटा ख्याल)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ऩीस	रेम	पनी	पम	पम	रेम	रेस	नीस	ब	न	ब	न	ढूँ	ऽ	ढ़	न
मरे	मप	नीनी	पम	रेम	पम	रेम	रेस	ब	न	ब	न	ढूँ	ऽ	ढ	न
ऩीस	रेम	रेस	नीस	रेम	पम	पनी	सं–	पनी	संरें	संनी	पम	रेम	पम	रेम	नीस (सम)
पम	रेम	पनी	संरे	संनी	पम	रेम	ऩीस	ऩीस	रेम	पनी	संरें	संनी	पम	रेम	नीस (सम)

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. वृन्दावनी सारंग किस अंग का राग है ?
2. वृन्दावनी सारंग का थाट बताओ ?
3. राग वृन्दावनी सारंग की जाति बताओ ?
4. राग वृन्दावनी सारंग का आरोह अवरोह बताओ ?
5. वृन्दावनी सारंग राग में कौन–से स्वरों का प्रयोग किया जाता है ?
6. राग पहचानों:

   नी स रे म, प नी प म रे, नी स।
7. राग वृन्दावनी सारंग का समय बताओ।
8. सारंग भाग के रागों के नाम बताओ ?

अध्यापक के लिए–

विद्यार्थियों को वृन्दावनी सारंग राग का अभ्यास हरमोनियम पर करवाया जाए।

पाठ 14

तालें

ताल दादरा (*i*)

साधारण जान पहचान–

दादर ताल छः मात्राओं की ताल है। इस ताल के तीन-तीन मात्रा के दो विभाग होते हैं। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली और चौथी मात्रा खाली होती है। यह सुगम संगीत शैली के साथ तबले पर बजाई जाती है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल एक गुण	धा	धिं	ना	धा	तिं	ना
दुगुण	धाधिं	नाधा	तिंना	धाधिं	नाधा	तिंना
चिन्ह	×			0		

तीन ताल (*ii*)

साधारण जान-पहचान

तीन ताल तबले की प्रसिद्ध ताल है। इस ताल को तृ ताल या तृतीय ताल भी कहा जाता है। तीन ताल में 16 मात्राएँ होती हैं। जिनकी चार-चार मात्राओं को चार भागों में बाँटा जाता है। इस ताल की पहली पाँचवीं और तेहरवीं मात्रा पर ताली और नौवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग गायन में ध्रुत ख्याल, तराना, भजन, शब्द ताल, तंत्र वाध्य में मसीतखानी गत, रज़ाखानी गत, नृत्य में कथक नृत्य आदि में किया जाता है। यह ताल विलम्बित, मध्य और ध्रुत लय में बजाई जाती है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
दुगुण	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
ताल चिन्ह	×					2				0			3			

झपताल (*iii*)

साधारण जान-पहचान

झपताल तबले की भाग जाति की प्रचलित ताल है। झपताल की 10 मात्राएँ होती हैं। इस ताल के 2-3, 2-3, मात्रा के चार विभाग होते हैं। इस ताल की पहली, तीसरी, आठवीं मात्रा में ताली और छठी मात्रा खाली होती है। इसकी झूमती हुई चाल पर इसका नाम झपताल पड़ गया। विसताल, शृंगार रस की प्रचारिक है। इस ताल का प्रयोग ख्याल गीत, कथक नृत्य और गतो के साथ बजाई जाती है।

मात्राएँ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल एक गुण	धिं	ना	धिं	धिं	ना	ति	ना	धिं	धिं	ना
दुगुण	धिंना	धिंधिं	नाति	नाधि	धिंना	धिंना	धिंधिं	नाति	नाधिं	धिंना
चिन्ह	×			2		0			3	

चारताल (*iv*) (चोताल)

साधारण जान-पहचान

चारताल पखावज की ताल है। परंतु आजकल तबले पर ही खुले हाथ से बजाई जाती है। यह ताल 12 मात्राओं की ताल है और इसके दो-दो मात्राओं के छः विभाग होते हैं। ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली, पाँचवीं, नौवीं, ग्याहरवीं मात्रा पर क्रमवार दूसरी, तीसरी, चौथी ताली है। इसकी तीसरी और सातवीं मात्रा खाली है। यह गम्भीर प्रकृति की ताल है और इसके बोल खुले बजाए जाते हैं। इसका ज्यादा प्रयोग ध्रुपद शैली में होता है।

मात्राएँ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल एक गुण	धा	धा	धिं	ता	किट	धा	धिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
दुगुण	धाधा	धिंता	किटधा	धिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	धिंता	किटधा	धिंता	तिटकत	गदि गन
चिन्ह	×			0	2		0		3		4	

पाठ 15

भजन

राग कल्याण – ताल कहरवा

स्थाई– भजो रे भैया, राम गोविन्द हरि।
जप तप साधन कछु नहीं लागत, खरचत नहीं गठरी

अन्तरा– संतत सम्पत सुख के कारण, जासों भूल परी,
कहत कबीरा राम न जा मुख, ता मुख धूल भरी

1	2	3	4	5	6	7	8	1	2	3	4	5	6	7	8
	स्थाई–														
स	ग	र्म	प	–	र्मध	प	पर्म	ग	गरे	स	नी	स	–	–	नी
भजो	रे	भैया	या	ऽ	राऽ	म	गोऽ	बिं-	ऽऽ	द	ह	री	ऽ	ऽ	भ
स	ग	र्म	प	प	प	ग	ग	प	–	प	प	प	मे	ग	रे
तो	रे	भै	या	ज	प	त	प	सा	ऽ	ध	न	क	छु	न	हीं
ग	–	ग	ग	नी	नी	प	प	रे	रे	स	ऩी	स	–	–	ऩी
ला	ऽ	ग	त	ख	र	च	त	न	हीं	ग	ठ	री	ऽ	ऽ	भ
	अन्तरा–														
स	ग	र्म	प	प	–	ग	ग	प	–	सं	ध	सं	सं	सं	–
जो	रे	भै	या	सं	ऽ	त	त	सं	ऽ	प	त	सु	ख	के	ऽ
नी	रें	सं	सं	नी	–	नी	–	नी	ध	नी	सं	नी	–	प	–
का	ऽ	र	न	जा	ऽ	सों	ऽ	भू	ऽ	ल	प	री	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	–	प	प	ग	ग	प	–	प	–	प	–	नी	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	ह	त	क	बी	ऽ	रा	ऽ	रा	ऽ	म	ना
र्म	ध	प	प	प	–	प	प	प	र्म	ग	रे	स	–	–	ऩी
जा	ऽ	मु	ख	ता	ऽ	मु	ख	धू	ऽ	ल	भ	री	ऽ	ऽ	भ
		×				0				×				0	

राग अल्हैया बिलावल-भजन–तीन ताल (*ii*)

स्थाई– प्यारे दर्शन दीजो आए, तुम बिन रहो न जाए।

अन्तरा– 1. जल बिन कमल चँद बिन रजनी, ऐसे तुम देखा बिन सजनी।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, बिरह कलेजो खाए।

2. दिवस न भूख नींद नहीं रैना, मुख सु कथक न आवै बैना।
कहा कछू–कछू कहत न आवै, मिलकर तपन बुझाए।

3. क्यों तरसावो अन्तरयामी, आए मिलों कृपा कर स्वामी।
मीरा दासी जन्म–जन्म की, पड़ी तुम्हारे पाए।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
				स्थाई–				सं	–	ध	प	म	ग	म	रे
								पिया	ऽ	रे	ऽ	द	र	स	म
ग	म	प	ग	म	रे	स	–	ग	म	म	रे	ग	प	ध	नी
दी	ऽ	जो	ऽ	आ	ऽ	ए	ऽ	तु	म	बि	न	र	हो	ऽ	ना
सं	रें	सं	नी	ध	प	म	ग								
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ए	ऽ								
				अन्तरा–				प	प	ध	नी	सं	सं	सं	सं
								ज	ल	बि	न	क	म	ल	चं
ध	नी	सं	रें	सं	नी	ध	प	ग	प	ध	नी	सं	सं	सं	–
ऽ	द	बि	न	र	ज	नी	ऽ	ऐ	ऽ	से	ऽ	तु	म	दे	ऽ
ध	नी	सं	रें	सं	नी	ध	प	प	–	प	प	ध	–	प	प
खा	ऽ	बि	न	स	ज	नी	ऽ	आ	ऽ	कु	ल	व्या	ऽ	कु	ल
ग	म	प	ग	म	रे	स	स	म	ग	म	रे	ग	प	ध	नी
फि	रूं	ऽ	रै	ऽ	न	दि	न	बि	र	ह	क	ले	ऽ	जो	ऽ
सं	रें	सं	नी	ध	प	म	ग								
खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ए	ऽ								
	×				2			0					3		

राग वृंदावनी सारंग (*iii*) भजन (तीन ताल)

स्थाई– जा जा रे भोरे दुर–दुर
रंग रूप ओर एक ही मुरत, मेरो मन कीओ चुर–चुर

अन्तरा– जोलो गरज निकट रहैं तों लो, काज सरे रहे दुर–दुर
सुर शाम अपनी गरजन को, कल्याण रसलै धुर–धुर।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	स्थायी–							सं	–	नी	प	म	रे	नी	स
								जा	ऽ	रे	ऽ	भो	ऽ	रे	ऽ
रे	–	रे	नी	स	स	म	प	रे	म	रे	प	–	प	नी	प
दु	ऽ	र	दु	ऽ	र	जा	ऽ	रं	ऽ	ग	रू	ऽ	प	ओ	र
म	–	रे	रे	नी	–	स	स	म	–	प	–	नी	नी	सं	सं
ऐ	ऽ	क	ही	मु	ऽ	र	त	मे	ऽ	रो	ऽ	म	न	की	ओ
रें	–	रें	नी	सं	सं	म	प								
चु	ऽ	र	चु	ऽ	र	जा	ऽ								
	अन्तरा–														
								म	–	प	–	नी	प	नी	नी
								जो	ऽ	लो	ऽ	ग	र	ज	नि
सं	सं	सं	सं	रें	नी	स	–	नी	नी	नी	नी	सं	–	सं	सं
क	ट	र	हैं	तों	ऽ	लो	ऽ	का	ऽ	ज	स	रे	ऽ	र	हे
नी	सं	रें	सं	नी	सं	नी़	प	रें	–	रें	सं	–	स	नी़	प
दु	ऽ	ऽ	र	दु	ऽ	ऽ	र	सु	ऽ	र	शा	ऽ	म	अ	प
म	रे	स	रे	नी़	नी़	स	–	म	म	प	प	नी	नी	सं	–
नी	ऽ	ग	र	ज	न	को	ऽ	क	लि	या	न	र	स	लै	ऽ
रें	ऽ	रें	नी	मं	मं	म	प								
धु	ऽ	र	धु	ऽ	र	जा	ऽ								

पाठ 16

शब्द

राग कल्याण–ताल दादरा (I)

साधो मन का मानु त्यागो।। काम क्रोध संगति दुर्जन की, ता ते अ हि नि स भागो।।
सुख दुख दोनों सन करि जानै, और मानु अपमाना।।
हरख सोग ते रहै अतीता, तिनि जगि ततु पछाना।।
उसतति निदा को त्यागै, खोजै पदु निरबाना।।
जन नानक इहु खेल कठनु है, किनहू गुरमुखि जामा।।

1	2	3	4	5	6	1	2	3	4	5	6
	स्थाई–										
ऩी	रे	रे	गग	ग	रे	गम॑	पम॑	गरे	नीरे	स	–
ज	न	ना	नक	इ	हु	खेऽ	लऽ	ऽक	ठनु	है	ऽ
पम॑	ग	म॑	पप	प	प	गम॑	धनी	धप	म॑ग	रेस	नीस
किन	हूं	ऽ	गुर	मु	खि	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	माऽ	ऽऽ	ऽऽ
	अन्तरा–										
म॑म॑	ग	–ग	म॑	ध	म॑ध	नीस	सं	नीं	रें	सं	–
उस	त	ऽति	निं	दा	ऽऽ	दोऽ	ऊ	ऽति	आ	गै	ऽ
नी	ध	सं	नी	ध	प	म॑प	नीसं	नीप	पम॑	गरे	स
खो	जै	ऽ	प	द	निर	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽ

राग अल्हैया बिलावल – ताल कहरवा (द्विगुण) (II)

स्थाई– साधो गोविन्द के गुण गावो
मानस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहि गवायो।

अन्तरा– 1. पतित पुनीत दिन बन्ध हरि, सरनि ताहि तुम आवओ।
राज को त्रासु मिटायो जिह सिमरत तुम काहे बिसरावयो।।

2. तजि अभ्यान मोह माया, फुनि भजन राम चित लावयो।
नानक कहत मुक्ति पंथ इहि गुरमुखि होइि तुम पावयो।

12	34	56	78	12	34	56	78	12	34	56	78	12	34	56	78
	स्थाई–				×				×			×			
धनी	सं	ध	प	म	ग	म	रे	ग	प	ध	नी	सं	–	ध	प
साऽ	ऽ	धो	ऽ	गो	ऽ	बिन	द	के	ऽ	गु	न	गा	ऽ	व	उ
ग	–	ग	रे	ग	प	प	प	म	ग	म	रे	स	रे	स	स
मा	ऽ	न	स	ज	न	म	अ	मो	ऽ	ल	क	पा	ऽ	इ	ओ
ग	ग	प	–	ध	–	नी	नी	सं	–	सरें	संनी	धनि	धप	मग	रेस
बि	र	था	ऽ	का	ऽ	हि	ग	वा	ऽ	वऽ	ओऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
	अन्तर–														
प	प	ध	नी	सं	–	सं	सं	ध	नी	सं	रे	सं	सं	ध	प
प	ति	त	पु	नी	ऽ	त	दि	ऽ	न	बं	ऽ	ध	ऽ	ह	रि
स	सं	गं	गं	रें	रें	सं	सं	सं	रें	सं	नी	ध	नी	ध	प
स	र	नि	ता	ऽ	हि	तु	म	आ	ऽ	व	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	ग	रे	ग	प	प	प	म	ग	म	रे	स	रे	स	स
ग	ज	को	ऽ	तरा	ऽ	सु	मि	टि	ओ	जि	ह	सि	म	र	त
ग	ग	प	–	ध	–	नी	नी	सं	–	सरें	संनी	धनी	धप	मग	रेस
तु	म	का	ऽ	हे	ऽ	बि	स	रा	ऽ	वऽ	ओऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

राग वृन्दावनी सारंग
शब्द – तीन ताल (III)

स्थाई– जीवत राम के गुण गाए।।
करहु कृपा गोपाल बीठले, बिसरि न कबही जाउ।। रहाउ।।

अन्तरा– 1. मनु तनु धनु सभु तुम्हरा स्वामी आन न दूजी जाई।
जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा, तुमरा पैनै थाई।।1।।

2. संघि संगति कै बलि बलि जाइ, बहुड़ि न जन्मा पाए।।
नानक दास तेरी सरणाई, जिउ भावै तिवै चलाऐ।।2।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
					स्थायी–			सं	–	नी	सं	नी	–	पम	प
								जी	ऽ	ए	तु	रा	ऽ	ऽऽ	म
रे	–	म	म	प	–	प	–	म	प	सं	–	नी	प	म	रे
कै	ऽ	गु	ण	गा	ऽ	ए	ऽ	क	रहु	कृ	ऽ	पा	ऽ	गो	ऽ
रे	म	प	म	रे	स	नी	स	नी	स	रे	म	प	नी	सं	–
पा	ऽ	ल	बी	ऽ	ठ	ले	ऽ	बि	स	रि	न	क	ब	ही	ऽ
मप	नींस	रेम	रेस	नीस	रेस	नी	प								
जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	इ	ऽ								
		×			2			0				3			
					अन्तरा–			म	म	प	प	नी	प	नी	नी
								म	नु	त	नु	ध	नु	स	भु
सं	सं	सं	–	रें	नी	सं	–	नी	सं	रें	रें	म	–	रें	सं
तु	म	रा	ऽ	सुआ	ऽ	मी	ऽ	आ	ऽ	न	न	दू	ऽ	जी	ऽ
नी	सं	रें	सं	नीं	सं	नी	प	म	प	सं	–	नी	प	म	रे
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	जि	उ	तूं	ऽ	रा	ऽ	खहि	ऽ
रे	म	प	म	रे	स	नी	स	नी	स	रे	म	प	नी	स	–
ति	व	ही	ऽ	र	ह	णा	ऽ	तु	म	रा	ऽ	पै	ऽ	नै	ऽ
मप	नीसं	रेम	रेंस	नीम	रेम	नी	प								
थाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई	ऽ								

पाठ 17

स्वागती गीत

(i) स्वागती गीत

स्थाई– घनन घनन घन घूँघरू बाजे,
ग गप मग तान,
झूम झूम कर खुशी मनाएँ,
आए हैं मेहमान,
आओ रे गाओ रे,
घर में आए हैं भगवान।

अन्तरा– रंग-रंगीली, सुर-सुरीली मत्तवाली है ये पवन,
आज लगे ना सबका जियरा डोले हैं सबके कदम,
महकी हैं फूलों से ठण्डी, हवाएँ-फिजाएँ।

अन्तरा– स्वागत करने, मन को हरने, पंछी चारों ओर,
खिल गई कलियाँ, भँवरों ने भी आज मचाए शोर
खुशियों का ये दिन आया, आने से उनके

स्वागती गीत (ताल कहरवा)

×				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
स्थाई–							
नी नी नी नी	ग प	म प	म ग	ग गप	म ग	सस	सस
घनन	घनन घन	घूंघरू	वाजे	ग गप	म ग	ताऽ	ऽन
ध ध स	स स	नी नी रे	रे रे	म ग	प म	ग	रे स
झूम	झूम के	खुशी	मनाओ	आएं	है मेह	मा	ऽन
नी ध	प	–	–	नी प	म	–	–
आओ	रे	ऽ	ऽ	गाओ	रे	ऽ	ऽ
नी ध	प	नी प	म	रे रे	रे रे	रे रे	स रे
आओ	रे	गाओ	रे	घर	में आ	ए हैं	भग
ग ग	रे रे	स स	नी	नी नी नी नी	ग प	–	–
वा ऽ	ऽऽ	ऽऽ	न	घनन	घनन घन	ऽ	ऽ
अन्तरा–							
प पम	ध प	प प	प प	म मग	प म	म म	म म
रंग रं	गीली	ऽऽ	ऽऽ	सुरसु	रीली	ऽऽ	ऽऽ
रे रे	रे रे	रे रे	स रे	ग ग	रे रे	स स	नी
मत	वाली	हैऽ	ये प	वन	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
प पम	ध प	प प	प प	म मग	प म	म म	म म
आज	लगे ना	ऽऽ	ऽऽ	सबका	जियरा	ऽऽ	ऽऽ
रे रे	रे रे	रे रे	स रे	ग ग	रे रे	स स	नी
डोऽ	ले ये	सव	के क	द म	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
नी नी	स रे	ग ग	ध प	म प	म म	म म	रे रे
म ह	की है	फू ऽ	लों से	ठं ऽ	डी ऽ	ऽऽ	हवा
ग ग	नी नी	पप	रे रे	ग ग	नी नी	पप	–
येंऽ	फिजा	येंऽ	हवा	येंऽ	फिजा	येंऽ	ऽ

(*ii*) स्वागती गीत

स्थाई– तुसी आए साडे वेहडे वंडे खुशीआं ते खेड़े
सांनू चड़िया ए गोड़े-गोड़े चाअ,
आए होए सजणा दा करिए,
स्वागत असीं अथाह।

अन्तरा– तुहाडे आउण नाल खुशीयां दे विच,
चार चन लग गए ने,
बुझे होए दिलां दे दीवे
आउण नाल जग पए ने
साडा मान-तान रखिया तुसीं
खंब असां नूं लग गए ने।

अन्तरा– तुहाडे आउण नाल खिड़ गए ने फुल,
महक वन्डन कलीयाँ
विद्यालिया विच आ गये तुसी
गुंझा मन दीयां होईयां पुरीयां
तुसी आओ-जाओ जी सदके
ना रहिण दिलां च दुरीयां।

स्वागती गीत (ताल कहरवा)

	×				0				
	1	2	3	4	5	6	7	8	
							तुसी	सस	
स्थाई–	मम	मग	पप	पम	धध	धप	नीनी	नीध	
	आए	साडे	वेहडे	वंडे	खुशी	आंते	खेडे	सानूं	
	धध	धरें	रेंसं	संनी	नीसं	सं	सं	सं	
	चड़ि	याए	गोड़े	गोड़े	चाअ	ऽ	ऽ	ऽ	
	सं	संग	संनी	धप	नी	–	पम	ग	
	आए	होए	सज	णा	दा	ऽ	करी	ए	
	ग	गप	पध	– प	म	प	ध	नी	
	स्वा	गत	असी	ऽ–अ	थाह	ऽ	ऽ	ऽ	
	सं	संगं	सनि	धप	नी	–	पम	ग	
	आए	होए	सज	णाज	दा	ऽ	करी	ए	
	ग	गप	पध	ऽप	म	–	–	ऽ	
	स्वा	गत	असी	ऽ	अ	थाह	ऽ	ऽ	सस
अन्तरा–	सं	रेंस	नीनी	धध	नी	सं	–		तुहाडे
	आउण	नाल	खुशी	यांदे	वि	च	ऽ	ऽ	
	संसं	ऽस	गंस	नीध	पध	नी	–	–	
	चार	चँन	लग	गए	ने	ऽ	ऽ	ऽ	
	नीनी	–स	नीनी	स	नीप	मम	ग	ग	
	बुझे	ऽहो	एऽ	ऽदि	ला	दे	दी	वे	
	गग	पप	पप	धप	मम	मम	मम	सस	
	आउण	नाल	जग	पए	ने	ऽ	ऽ	साडा	
	मम	म	–	पनी	पप	म	–	सस	
	मान	ता	ऽन	साडा	मान	ता	ऽन	साडा	
	म	म	म	पनी	पम	ग	ग	ग ग	
	मान	तान	रखि	यातु	सीं	ऽ	ऽ	खंब	
	प	पप	प	धप	म	म	म		
	अ	सानूं	लग	गए	ने	ऽ	ऽ		

प्रश्न बैंक

प्रश्न 1. संगीत के तीन अंगों के नाम बताओ?
उत्तर– गायन, वादन, नृत्य।

प्रश्न 2. कोई एक अंलकार लिखो।
उत्तर– सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनी सं

अवरोह–सं नीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

प्रश्न 3. विलिम्बत लय की दो तालों के नाम बताओ।
उत्तर– आड़ा चारताल, तिलवाड़ा ताल।

प्रश्न 4. मध्य लय की दो तालों के नाम लिखो।
उत्तर– झपताल, तीन ताल।

प्रश्न 5. ध्वनि कितने प्रकार की होती है?
उत्तर– ध्वनि दो प्रकार की होती है–
1. संगीतउपयोगी ध्वनि
2. संगीत अनुउपयोगी ध्वनि

प्रश्न 6. राग के खास स्वर-समूह को क्या कहते हैं?
उत्तर– पकड़।

प्रश्न 7. राग की भूमिका किसको कहते हैं?
उत्तर– आलाप।

प्रश्न 8. स्वरों में रची रचना को क्या कहते हैं?
उत्तर– सरगम गीत।

प्रश्न 9. तानपुरा को किस चीज से बजाते हैं?
उत्तर– ऊँगलियों से।

प्रश्न 10. राजा स्वर किसे कहते हैं?
उत्तर– वादी स्वर।

प्रश्न 11. वादी सम्वादी स्वरों में कौन-सा सम्बन्ध हैं?
उत्तर– षड़ज पंचम भाव या षड़ज मध्यम भाव।

प्रश्न 12. वह कौन-से स्वर हैं जिनकी तुलना प्रजा से की है?
उत्तर– अनुवादी स्वर।

प्रश्न 13. राग में लड़ाई झगड़ा पैदा करने वाले स्वरों को क्या कहते हैं?
उत्तर– विवादी स्वर।

प्रश्न 14. राग में जिन स्वरों की मनाही होती है, उन्हें क्या कहते हैं?
उत्तर– वर्जित स्वर।

प्रश्न 15. प्रो. सोहन सिंह का जन्म कहाँ और कब हुआ?
उत्तर– सनः 1925 में लुधियाना के गाँव रायपुर में हुआ।

प्रश्न 16. प्रो. सोहन सिंह के पिता का क्या नाम था?
उत्तर– सरदार फुम्मन सिंह।

प्रश्न 17. प्रो. सोहन सिंह की माता का क्या नाम था?
उत्तर– प्रताप कौर।

प्रश्न 18. डॉ. दलीप चंद्र बेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ?
उत्तर– 24 मार्च सन् 1901 में पंजाब के श्री आनन्दपुर साहिब में हुआ।

प्रश्न 19. डॉ. दलीप चंद्र बेदी के पिता का क्या नाम था?
उत्तर– श्री सन्त राम जी।

प्रश्न 20. डॉ. दलीप चंद्र बेदी को 'संगीत शृंगार' की उपाधि कब मिली?
उत्तर– सन् 1931 में।

प्रश्न 21. डॉ. दलीप चंद्र बेदी के गुरु का नाम क्या था?
उत्तर– डॉ. फैयाज खान।

प्रश्न 22. दो तत्त वाद्यों के नाम बताओ।
उत्तर– सितार, सरोद।

प्रश्न 23. हवा के साथ बजने वाले वाद्यों को क्या कहते हैं?
उत्तर– सुषिर वाद्य।

प्रश्न 24. दो अवनद्ध वाद्यों के नाम बताओ।
उत्तर– तबला, ढोलकी।

प्रश्न 25. तानपुरे का आविष्कार कब हुआ?

उत्तर– चौंहदवी शताब्दी में।

प्रश्न 26. तानपुरे के आविष्कारक का नाम बताओ।

उत्तर– तम्बुरा नामक गन्धर्व ने

प्रश्न 27. तानपुरे के चार भागों के नाम बताओ।

उत्तर– तुम्बा, डांड, परदे, तबली।

प्रश्न 28. तुम्बे और डांड के जोड़ स्थान को क्या कहते हैं?

उत्तर– गुल्लू।

प्रश्न 29. तानपुरे में कितनी तारें होती हैं?

उत्तर– चार।

प्रश्न 30. भारतीय शस्त्रय गायक का नाम बताओ।

उत्तर– बड़े गुलाम अली खां।

प्रश्न 31. तानपुरे में पहली तार को किस स्वर से मिलाया जाता है?

उत्तर– मन्द्र सप्तक के मध्यम से।

प्रश्न 32. नाद की किस्मों के नाम बताओ।

उत्तर– आहतनाद और अनाहत नाद।

प्रश्न 33. बड़े ख्याल को और किसी नाम से जानते हैं?

उत्तर– बिलम्बित ख्याल।

प्रश्न 34. छोटे ख्याल का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– ध्रुत ख्याल।

प्रश्न 35. बड़े ख्याल की प्रकृति कैसी है?

उत्तर– गम्भीर।

प्रश्न 36. छोटे ख्याल की प्रकृति कैसी है?

उत्तर– चंचल।

प्रश्न 37. भारतीय संगीत में कितने प्रकार के वाद्य प्रयोग होते हैं ?

उत्तर– **चार**–तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनध वाद्य, घन वाद्य।

प्रश्न 38. राग कल्याण के थाट का नाम बताओ।

उत्तर– कल्याण थाट।

प्रश्न 39. राग कल्याण के वादी सम्वादी सुर बताओ।

उत्तर– वादी ग, सम्वादी नी।

प्रश्न 40. राग कल्याण का गायन समय बताओ।

उत्तर– रात का पहला पहर।

प्रश्न 41. राग कल्याण की जाति बताओ।

उत्तर– सम्पूर्ण–सम्पूर्ण।

प्रश्न 42. राग अल्हैया बिलावल का थाट बताओ।

उत्तर– बिलावल।

प्रश्न 43. राग अल्हैया बिलावल का गायन समय बताओ?

उत्तर– सुबह का पहला प्रहर।

प्रश्न 44. राग अल्हैया बिलावल का वादी सम्वादी स्वर बताओ।

उत्तर– वादी ध सम्वादी ग।

प्रश्न 45. राग अल्हैया बिलावल के वर्जित स्वर बताओ।

उत्तर– आरोह में मध्यम।

प्रश्न 46. राग वृन्दावनी सारंग का थाट बताओ।

उत्तर– काफी।

प्रश्न 47. राग वृन्दावनी सारंग का अंग बताओ।

उत्तर– सारंग अंग।

प्रश्न 48. राग वृन्दावनी सारंग की जाति बताओ।

उत्तर– औड़व–औड़व।

प्रश्न 49. दोनों निषाद प्रयोग होने वाले राग का नाम बताओ।

उत्तर– वृन्दावनी सारंग।

प्रश्न 50. वृन्दावनी सारंग के साथ मिलते-जुलते राग का नाम बताओ।

उत्तर– सूर मल्लाह।

प्रश्न 51. दादरा ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं?

उत्तर– छः मात्राएँ।

प्रश्न 52. दादरा ताल में खाली कौन-सी मात्रा पर आती है?

उत्तर– पाँचवीं मात्रा पर।

प्रश्न 53. दादरा ताल की दूसरी मात्रा पर कौन-सा बोल होता है?

उत्तर– धिं।

प्रश्न 54. झपताल की कितनी मात्राएँ होती हैं?

उत्तर– दस मात्राएँ।

प्रश्न 55. झपताल के कितने विभाग होते हैं?
उत्तर– 2–3, 2–3 मात्रा के चार विभाग।

प्रश्न 56. झपताल की कितनी तालीयाँ होती हैं?
उत्तर– तीन तालीयाँ।

प्रश्न 57. झपताल की ताल में खाली कौन-सी मात्रा पर है?
उत्तर– छठी मात्रा पर।

प्रश्न 58. 16 मात्राओं वाली ताल का नाम बताओ।
उत्तर– तीन ताल।

प्रश्न 59. तील ताल में ताली कौन-सी मात्रा पर होती है?
उत्तर– पहली, पाँचवीं और तेहरवीं मात्रा पर।

प्रश्न 60. तीन ताल में खाली कौन-सी मात्रा पर आती है?
उत्तर– नौवीं मात्रा पर।

प्रश्न 61. 12 मात्रा वाली ताल का नाम बताओ।
उत्तर– चार ताल।

प्रश्न 62. चार ताल के कितने विभाग होते हैं?
उत्तर– 2–2 मात्रा के छः विभाग।

प्रश्न 63. चार ताल में कितनी तालीयाँ होती हैं?
उत्तर– चार तालीयाँ।

प्रश्न 64. चार ताल में खाली कौन-सी मात्रा पर होती है?
उत्तर– तीसरी और सातवीं मात्रा पर।

प्रश्न 65. चार ताल की पाँचवीं मात्रा पर कौन-सा बोल आता है?
उत्तर– किट।